देश दर्शन

पूर्ण संख्या—५६

जबलपुर-दर्शन

सितम्बर १९४४ | वर्ष ६

भाद्रपद, २००१ | संख्या ३

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

'भूगोल'-कार्यालय, इलाहाबाद

वार्षिक मूल्य	४)
विदेश में	६)
इस प्रति का	।=)

विषय-सूची

स्थित सीमा, तथा विस्तार

जबलपुर इसी कमिश्नरी का ज़िला है। यह २२'४९ और २४'८ उत्तरी अक्षांशों और ७९'२१ और ८०'४८ पूर्वी देशान्तरों के बीच में स्थित है। यह हैहय वंशी चेदि राजाओं की राजधानी थी। जावालि पट्टन कहते थे। इशी से बिगड़ कर जबलपुर नाम पड़ा। जबलपुर जिले के दो राजनैतिक अंग हैं। इस जिले का पुराना और बड़ा भाग १८१८ में ब्रिटिश राज्य में आया। विजै राघोगढ़ का प्राचीन राज्य गदर में जप्त कर लिया गया। और १८६५ में इस जिले में शामिल कर लिया गया। इस जिले के उत्तर में मध्य भारत का मैहर राज्य, उत्तर पूर्व में पन्ना राज्य जबलपुर जिले को दमोह जिले से पृथक करता है। इसके पूर्व में रीवाँ राज्य, दक्षिण और पूर्वमें मंडला का जिला है। कुछ दूर तक सिडनी जिला भी जबलपुर की दक्षिणी सीमा बनाता है। दक्षिण-पश्चिम में नरसिंहपुर, और पश्चिम में दमोह जिला है।

मुरवारा तहसील के ७ गांव (जुंवानी, पचोहा, झाजवाड़ीं, जूटेहरा, गोधन और सुरमा गांव) मैहर राज्य में दो (कई और खलिंद) गांव रींवा राज्य में स्थित हैं। नागोद राज्य के ११ गांव और मैहर के २ गांव मुरवारा तहसील के अन्तर्गत स्थित हैं।

इसका क्षेत्रफल ३९१२ वर्ग मील है। इस जिले में तीन तहसीलें हैं। जबलपुर तहसील दक्षिण में है। सिहोरा तहसील मध्य में है। मुरवाड़ा तहसील उत्तर में है। दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व तक इसकी अधिक से अधिक लम्बाई १२० मील और

पश्चिम से पूर्व तक अधिक से अधिक चौड़ाई ७२ मील जबल-पुर जिले में लंबा तंग मैदान उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम तक चला गया है। यह चारों ओर पहाड़ियों से घिरा है। यह मैदान नर्मदा-घाटी का अंग है। किनारों पर पहाड़ियों के घिरे होने से इस उपजाऊ मैदान का दृश्य बड़ा सुहावना लगता है। यहां थोड़ी थोड़ी दूर पर पहाड़ घाटी बन और धारा का दृश्य तेज़ी से यात्री के सामने आता है। दक्षिण-पश्चिम का हवेली मैदान प्रान्त का एक अत्यन्त उपजाऊ भाग है। यहां मेंडों से घिरे हुये गेहूँ के खेत ही खेत दिखाई देते हैं। यह मैदान जिले की दक्षिणी-पश्चिमी सीमा से सिहोरा (नगर) तक फैला हुआ है। इसमें हिरन और नर्मदा नदियों की घाटियां शामिल हैं। हिरन नदी विन्ध्याचल की पहाड़ियों के पास होकर बहती है। यहां से यह मैदान रेलवे लाइन तक चला गया है। सरोली के पास रेलवे लाइन का भी कुछ भाग इसमें शामिल है। शीतकाल में यहां मीलों तक हरे खेत लहलहाते हैं। इनके बीच में सीमा बनाने वाली काली मेंडे और टीले हैं। मैदानके पश्चिम की ओर विन्ध्या के बलुआ पत्थर के पहाड़ हैं। पूर्व की ओर भिटरीगढ़ श्रेणी की रूपान्तरित शिलायें हैं। विन्ध्याचल का श्रेणी मैदान के ऊपर एक दम सपाट उठी हुई है। दूर से देखने पर यह अधिक ऊँची नहीं मालूम होती है। पास आने पर इसकी वास्तविक ऊँचाई का पता लगता है। वर्षा ऋतु में खेतों में मेंडों के बांध होने से समस्त मैदानी प्रदेश पानी से भर जाता है और एक विशाल झील के समान प्रतीत होता है। इसके बीच में पेड़ और ऊंचे टीले असंख्य द्वीप के समान मालूम होते हैं। वर्षा

समाप्त होने पर शीतकाल में होली तक प्रायः सब कहीं घास रहती है। इसका दृश्य कुछ मटीला या फीका पीला रहता है। होली के बाद घास जल जाती है और सब कहीं काली मिट्टी और काली पहाड़ियां दिखाई देती हैं। पहाड़ियों के ढाल ज़ीनेदार हैं। इनकी चोटियां मेज़ के समान चपटी हैं। वर्षा आरंभ होने तक यही काला रंग रहता है। वर्षा ऋतु में फिर सब कहीं हरियाली हो जाती है। काली मिट्टी और काली चट्टानें हरे भरे पेड़ों, घास और झाड़ियों में छिप जाती है। इस अग्नेय प्रदेश में गोंड, बैगा और कोल लोग रहते हैं। वे साधारण खेती करते हैं और प्रायः ज्वार बाजरा उगाते हैं। बर्गी के पूर्वी भाग इमलई के राजासाहब के अच्छे गांवों में मेड़ बंधे खेतों में गेहूँ उगाया जाता है। आग्नेय लावा के (ट्रैप) प्रदेश के उत्तर में सिहोरा तहसील का पूर्वी भाग है। यह पहाड़ियों और जंगलों का प्रदेश है। इसके बीच बीच में पहाड़ी धारायें (छोटी नदियां) हैं इसमें कहीं अच्छी मिट्टी वाले और कहीं निकम्मी मिट्टी के गांव मिलते हैं। इसका धरातल बहुत विषम है। इसमें स्थान स्थान पर रूपान्तरित शिलाओं की छोटी छोटी पहाड़ियां है। स्लीमानाबाद के पश्चिम में घना जंगल है। इधर कुछ स्थानों को छोड़ शेष भागों की मिट्टी अच्छी नही है। तहसील के जिन भागों में भानेर की पहाड़ियां हैं वहां बहुरी बन्दर के गांवों तक अचानक चढ़ाई पड़ती है। यहीं विन्ध्याचल की शिलाओं से घिसी हुई मोटी बालू है। यहां पानी की कमी है। इसलिये रबी की अपेक्षा खरीफ की फसल अच्छी होती है। मुड़वारा तहसील का पश्चिमी भाग भी बहुरी बन्दर के समान

है । मुरवारा तहसील के इस भाग में लहरदार मैदान है । इस मैदान में प्रायः बलुआ पत्थर और मोटो बालू है । भानेर श्रेणी के टीलों के नीचे दक्षिणी सीमा के पास बांध इमलाज हवेली की उपजाऊ काली मिट्टी है । यहां बढ़िया गेहूँ पैदा होता है । मुरवारा तहसील का पूर्वी भाग विजैराघोगढ़ के समान खुला हुआ मैदान है । इसके उत्तर में कैमूर की पहाड़ियां हैं । इसके मध्यवर्ती भाग में टूटी फूटी और निचली कहेजुआ की पहाड़ियां, दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर चली गई हैं । यहां कई स्थानों में छोटे छोटे जंगल हैं । समस्त पूर्वी सीमा और कहीं कहीं दक्षिणी सीमा के पास इमारती लकड़ी के अच्छे घने वन हैं । यहां महानदी और उसकी सहायक नदियां बहती हैं कैमूर और कहेजुआ पहाड़ियों के बीच में घिरी हुई महानदी के किनारों पर अच्छे गांव मिलते हैं । यहां कालो मिट्टी है । रबी की फसल होती है । महानदी के पूर्व में बिल्लौरी चट्टानों की भूमि में महुआ के पेड़ बहुत होते हैं ।

पहाड़ी श्रेणियां

भांरोर, कैमूर और भिटरोगढ़ जिले की प्रधान पहाड़ियां हैं । विन्ध्याचल की भांरोर श्रेणी जिले की पश्चिमी सीमा के पास आरम्भ होती है । वास्तव में विन्ध्याचल के दक्षिणी-पूर्वी अंग का नाम भांरोर श्रेणी है । यह कटंगी से हिरन और नर्मदा के संगम (दक्षिणी पश्चिमी कोने तक दमोह और इस जिले के बीच में सीमा बनाती है । पहले यह अकेली पहाड़ी के रूप में आरम्भ होती है । मध्यवर्ती भाग में इसकी कुछ शाखायें फूटती हैं । काटंगी के पास इसमें पहाड़ियों का जटिल समूह हो जाता

है। इसकी ऊँचाई दो-ढाई हज़ार फुट है। विन्ध्या की कैमूर पहाड़ी काटंगी के पास आरम्भ होती है और भांरोर श्रेणी के समानान्तर चलती है। इसकी अधिक से अधिक चौड़ाई ५० मील है। कुछ दूर यह जबलपुर और दमोह जिलों के बीच में सीमा बनाती है। फिर यह पूर्व की ओर मुड़कर सिहोरा तहसील के पश्चिमी भाग में प्रवेश करती है।

इसके आगे यह मुरवारा तहसील में पहुँचती हैं। यह कुछ स्थानों में खंडित हो गई है। अधिकतर भागों में यह मुरवारा तहसील की उत्तरी और उत्तरी-पूर्वी सीमा बनाती है। विन्ध्याचल के प्रदेश में गोल टीलों के रूप में पहाड़ियों की श्रेणी फैली हुई है। इनके बीच में क्रमशः नीचे आखात है। यहां बिल्लौरी मिट्टी है। इसमें महुआ के पेड़ बहुत होते हैं। जंगल में पेड़ छोटे हैं झाड़ियां अधिक हैं। मिट्टी अच्छी नहीं है। भिटरीगढ़ की पहाड़ियां जिले के मध्य भाग में दक्षिण-पश्चिम से उत्तर की ओर चली गई हैं। यह पहाड़ियां काली कछारी भूमि के ऊपर सपाट उठी खड़ी हैं। यहां बन अच्छा है। यह गर्मी में भी हरा रहता है। पहाड़ियों के पड़ोस में मिट्टी बड़ी तेज़ी के साथ बदल जाती है।

विन्ध्याचल श्रेणी गुजरात में जोबात (२२'-२७ उत्तरी अक्षांश और ७४'३५ पूर्वी देशान्तर) से विहार के सहसाराम तक ७०० मील लम्बी है। सहसाराम के आगे राजमहल तक राजमहल की पहाड़ियां हैं। यह नर्मदा के उत्तर में है। इसका पूर्वी भाग कैमूर कहलाता है कैमूर सोन घाटी के उत्तर में है। सोन

घाटी वास्तवमें मालवा और बुन्देलखंड के पठार का दक्षिणी सिरा है। गुजरात से झाबुआ राज्य को पार करके विन्ध्याचल सागर और दमोह जिलों की दक्षिणी सीमा बनाती है। इसके आगे कैमूर श्रेणी आरम्भ होती है जो बघेलखंड या रीवां होती हुई विहार में प्रवेश करती है। इसकी अधिक से अधिक चौड़ाई ५० मील है। सोन नदी के उत्तर में कैमूर की पहाड़ियां एक दीवार के समान उठी हुई हैं। कहीं कहीं मीलों तक नर्मदा नदी इसकी तलहटी को छूती है। कहीं ये नर्मदा से दूर हो जाता है। विन्ध्याचल और नर्मदा की धारा के बीच में भोपाल और इन्दौर का मैदान आ जाता है। इसकी शिलायें बलुआ पत्थर की बनी हैं। इनका रंग कुछ बैंजना है। इसके उत्तर में २५० मील लम्बा और २२५ मील चौड़ा मालवा और बुन्देलखंड का पठार है। यह पठार लहरदार या कुछ ऊँचा नीचा है। इसके बीच बीच में पहाड़ियां इधर उधर फैली हुई हैं। इसकी सबसे अधिक उत्तरी श्रेणी झांसी बांदा, इलाहाबाद और मिर्जापुर जिलों को पार करती है। इसकी ऊँचाई कहीं भी २००० फुट से अधिक नहीं है। यह वास्तव में पठारों की एक पंक्ति सी मालूम होती है। इन जिलों में कहीं कहीं विन्ध्या की अकेली पहाड़ियां बिखरी हुई है। इनकी एक छोटी पहाड़ी (पभोसा) यमुना के बायें किनारे पर है। गंगा यमुना द्वाबा में केवल यही एक पहाड़ी पाई जाती है। भाण्ेर या पन्ना की पहाड़ियां विन्ध्या के दक्षिणी पूर्वी अंग हैं। यह सागर दमोह की दक्षिणी और मैहर राज्य की उत्तरी सीमा बनाती है। उत्तर पश्चिम से दक्षिण-पूर्व तक इनकी लम्बाई १२० मील है। इनकी सब से ऊँची फलामार

चोटी २५४४ फुट ऊँची है। इनकी दो शाखायें मालवा में हैं। यह भिलसा और झाबुआ में आरम्भ होती हैं। विन्ध्याचल विशाल बलुआ पत्थर के बने हैं। मालवा के पठार में इनका अधिकतर भाग लावा की तहों से ढका है। इनकी चपटी चोटियों पर ग्वालियर, नरवर, चन्देरी, मांडू, अजैगढ़ और बांदोगढ़ से निकलती हैं। विन्ध्या का अर्थ आखेट या शिकार है। यह मध्य देश और दक्षिण के अनार्य देश के बीच में सीमा बनाता था।

कहते हैं विन्ध्या और हिमालय में प्राचीन समय में बड़ी प्रतिस्पर्धा थी। सूर्य हिमालय की मेरु चोटी की परिक्रमा करता था। इस पर विन्ध्या ने अपनी परिक्रमा करने के लिये सूर्य को आदेश दिया। सूर्य ने विन्ध्या की यह आज्ञा न मानी। इससे सूर्य को छिपाने के लिये विन्ध्या बड़े वेग से ऊंचा होने लगा। वह हिमालय के मेरु शिखर से भी कहीं अधिक ऊंचा होगया। इसपर देवताओं ने विन्ध्या के गुरु अगस्त मुनि की सहायता मांगी। अगस्त ने विन्ध्या को अपना सिर नीचा करने को कहा जिसको उत्तर से दक्षिण की ओर आ जा सके। अपने गुरु अगस्त की आज्ञा मानकर विन्ध्या ने अपना सिर झुकाया। अगस्त उत्तर से दक्षिण की ओर सिरके ऊपर से चले गये। लेकिन वे फिर नहीं लौटे। इसलिये विन्ध्या अपना सिर नीचा किये पड़ा है।

विन्ध्या और सतपुड़ा पर्वत श्रेणियों के संगम के पास स्थित होने से जबलपुर का ज़िला भारतवर्ष के विशाल मध्यवर्ती जल विभाजक का अंग है। जिले के दक्षिणी भाग का वर्षा जल

नर्मदा और उसकी सहायक हिरन और गौर नदियों में बह जाता है। इस जिले की प्रधान नदी नर्मदा है यह पूर्व से पश्चिम की ओर बहती है। यह मंडाला जिले की ओर से आती है और पश्चिम की ओर जाती है। जिले के दक्षिणी भाग को पार करके यह नरसिंहपुर में प्रवेश करती है।

जबलपुर जिले में नर्मदा की लम्बाई ७० मील है। जबलपुर शहर से १३ मील की दूरी पर नर्मदा संगमरमर की शिलाओं की नद कन्दराओं को पार करती है। यहां यह चूने और मेग्नेशियम की १०० फुट ऊँची शिलाओं के बीच में एक संकुचित और टेढ़ा मोड़दार मार्ग बनाती है। यहां नर्मदा के प्रबल प्रवाह का दृश्य बड़ा सुंदर है। चांदनी रात में इसकी सुन्दरता और भी अधिक बढ़ जाती है।

हिरन नदी दक्षिणी-पूर्वी सिरे पर जबलपुर से २८ मील पूर्व में कुन्दम के पास एक बड़े ताल से निकलती है। कहते हैं गोंड सरदार कल्याणसिंह ने यहां ताल को शान्त देखने के लिये अपने दामाद की बलि चढ़ाई थी। इसपर उसकी अकेली लड़की हीरा ने भी पानी में कूदकर आत्महत्या कर ली। हीरा के कूदने से तालाब फिर उमड़ निकला। उसी से हिरन नदी बन गई। पहले कुछ दूर तक यह उत्तर की ओर बहती है। फिर यह पश्चिम की ओर मुड़ती है। परियत और दूसरी छोटी सहायक नदियों का पानी लेकर हिरन नदी सांकल के पास नर्मदा में मिल जाती है।

गौर छोटी (४९ मील लम्बी) नदी है। यह मंडला जिले

से निकलती है। जबलपुर से ५ मील दक्षिण की ओर यह नर्मदा के दाहिने किनारे पर मिल जाती है। इसकी घाटी में सुन्दर मूल्यवान पत्थर मिलते हैं। महानदी भी मंडला जिले से निकलती है। दक्षिण-पूर्वी सिरे पर यह जबलपुर ज़िले में प्रवेश करती है। यह उत्तरवाहिनी है। विजै राघोगढ़ प्रदेश को पार करके यह रीवां राज्य में पहुँचती है और गंगा की सहायक सोन नदी में मिल जाती है। निवार और कटनी बहुत छोटी नदियां हैं जो जबलपुर जिले में सोन की सहायक महानदी में मिल जाती है। पश्चिम की ओर कैमूर श्रेणी से केन नदी निकलती है। यह कुछ ही दूर तक जबलपुर जिले में बहती है। पन्ना राज्य को पार करने के बाद यह नदी बड़ी हो जाती है। कहते हैं कि किनिया नाम की एक लड़की ने अपने पति के वियोग में शरीर त्यागा था। इसी से इसका नाम केनिया या केन पड़ गया। इसकी तली में सुन्दर पत्थर मिलते हैं। जबलपुर जिले के मैदान की ऊँचाई १२०० से १५०० फुट तक है। मदन महल के पास जबलपुर शहर समुद्र तल से १३०६ फुट ऊंचा है। मदन महल से ४ मील दक्षिण की ओर बगरई के पास की उंचाई १५११ फुट है। पनागर से कुछ मील दक्षिण-पूर्व में बिचुआ १६८१ फुट ऊंचा है। सिहोरा के उत्तर पूर्व में लोरा १९२३ फुट और पिपरोड १९५३ फुट ऊंचे हैं। मुड़वारा कस्बे की उंचाई १३६३ फुट है। सबसे अधिक ऊंचे स्थान दक्षिणी भाग में हैं। यह ऊंचा प्रदेश सतपुरा के जल विभाजक तक फैला हुआ है। दुरिया गांव की उंचाई २४२६ फुट, वंजारी २२२३ फुट है। काटंगी के पास पश्चिमी भाग की चोटियों की

उंचाई २००० से २५०० फुट तक है। स्वयं काटंगी १४११ फुट ऊंचा है। भिटरीगढ़ श्रेणी में भिटरी की उंचाई २०४६ फुट है। कैमूर श्रेणी में भैंसाकुंड की उंचाई २०३८ फुट है। कहेंजुआ श्रेणी में जिले की उत्तरी पूर्वी सीमा के पास लखरामपुर की उंचाई १७८० फुट है। सिहोरा और जबलपुर तहसीलों में भूमि का ढाल उत्तर पूर्व से दक्षिण पश्चिम की ओर है। दक्षिण-पश्चिम की ओर भूमि की उंचाई केवल १३६१ फुट रह गई है। मुड़वारा तहसील में भूमि का ढाल दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर कहीं कहीं भूमि की उंचाई केवल १०८० फुट है।

जबलपुर जिले का दक्षिणी भाग सतपुरा श्रेणी की तलहटी की पहाड़ियों तक चला गया है। यह नाम नया है। पहले यह नर्मदा और ताप्ती घाटियों को पृथक करने वाली पहाड़ी श्रेणी के लिये प्रयुक्त होता था। इन पर्वतों को विन्ध्या के 'सात पुत्र' नाम से पुकारते थे इसी से बिगड़कर सतपुरा नाम पड़ गया। कुछ लोगों का कहना है कि इनमें सातपुरा या समानान्तर पहाड़ियां हैं इसलिये यह नाम पड़ा। आजकल सतपुड़ा नाम उस समस्त पर्वत श्रेणी के लिये प्रयुक्त होता है जो मध्यभारत में अमरकंटक के पास (२३°४० उत्तरी अक्षांश और ८१°४६ पूर्वी देशान्तर) में आरम्भ होती है। यहां से नर्मदा के दक्षिण में प्रायः पश्चिमी तट के समीप ६०० मील तक चली गई है। उत्तर से दक्षिण तक इनकी अधिक से अधिक चौड़ाई १०० मील है। यह श्रेणी प्रायः त्रिभुजाकार है। अमरकंटक से एक बाहरी पहाड़ी १०० फुट दूर कालाघाट जिले के ताल टेकरी स्थान तक चली गई है। यहां इस त्रिभुज का शीर्ष है। यहां से इनकीदो प्रायः समानान्तर

पहाड़ियां पश्चिम की ओर जाती हैं और छोटी होती जाती हैं। मध्यप्रान्त में इनके सिरे पर असीरगढ़ का किला बना है। इसके आगे इनकी राजपिखला की पहाड़ियां हैं। जो पश्चिमी घाट तक नर्मदा घाटी को ताप्ती घाटी से अलग करती है। पचमढ़ीके पास इनकी उंचाई ३५३० फुट है। चिकाल्दा (बरार) में इनकी उंचाई ३६६४ फुट है। बैतूल में खामला के पास एक चोटी ३७०० फुट ऊंची है। बालाघाट में रायगढ़ केवल १२०० फुट ऊंचा है। इस ओर यहां जानवर चराये जाते हैं। इनकी सबसे (४४५४ फुट) ऊंची चोटी धूपगढ़ है। बम्बई प्रांत में तूरनमाल के पास इनका दृश्य बड़ा मनोहर है। उत्तर में नर्मदा और दक्षिण में ताप्ती की ओर इनका एकदम सपाट ढाल है दो नदियों के बीच में यहां पठार बहुत तंग और लम्बा होगया है। इसका क्षेत्रफल १६ वर्ग मील है। अधिक पश्चिम में यह एक दीवार के समान मालूम होता है। सतपुरा का ऊपरी धरातल प्रायः लावा की तहों से ढका है। इनके नीचे कहीं बिल्लौर, और कहीं बलुआ पत्थर की शिलायें हैं। इनके पड़ोस में उत्तर और दक्षिण की ओर छोटी छोटी पहाड़ियां हैं। सतपुरा की औसत उंचाई २००० फुट है।

भूगर्भ विद्या की दृष्टि से जबलपुर जिले का अध्ययन बड़ा मनोहर है। एकदम नई मिट्टीं जिले के कछारीं भाग में मिलती है। इसके दक्षिणी-पश्चिमी भाग में कुछ लाल, भूरी या पीली कड़ी चिकनी मिट्टी है। इसमें कंकड़ बहुत है। इसमें लोहे का भी कुछ अंश है। ऊपर वाली तह के नीचे कुछ बालू है जो इसे नीचे की तहों से अलग करती है। कंकरीली तहों में पुराने

समय के जानवरों के ढांचे मिलते हैं। इसमें कुछ स्तनधारी और कुछ रेंगनेवाले हैं। इनकी जाति के कुछ पशु इस समय भी जीवित हैं। कुछ समूल नष्ट हो चुके हैं। झांसी घाट से कुछ मील ऊपर दरती कछार में कुछ प्राचीन पशुओं के ढांचे मिले हैं। हिरन घाटी के कैमोरी गांव के पास कुछ गहराई में गैंडा और जुगाली करनेवाले पशुओं के ढांचे मिले हैं।

लेटराइट की तहों में लाल, सफेद, नीली, चिकनी मिट्टी, मुलायम बलुआ पत्थर, लोहे के प्रमाण, और दूसरे पदार्थ मिले रहते हैं। यह ऊपरी और निचली विन्ध्या शिलाओं और धारवार शिलाओं के ऊपर पाई जाती हैं। इस प्रकार की तहें मुरवारा तहसील में अधिक हैं कुछ सिहोरा में भी पाई जाती हैं।

प्राचीन लावा की तहें दक्षिणी-पूर्वी सीमा के पास मिलती हैं। यह जबलपुर शहर के पड़ोस तक फैली हुई हैं। यह भाग सतपुड़ा पहाड़ियों का उत्तरी सिरा है। यहां कई चोटियां १६०० से २००० फुट ऊंची हैं। सब से ऊंची चोटी दुरिया है। यह २४२६ फुट ऊंची है। इनकी कन्दराओं में जियोलाइट, एगेट और जास्पर पत्थर मिलते हैं। एजेट और जास्पर नर्मदा की तली में मिलते हैं। इन्हें काटकर और चिकना करके संगतराश मूल्यवान चीजें बनाते हैं।

तमेटा—यह मीठे पानी की शिलायें है और लावा की तहों के नीचे मिलती हैं। लावा की तहों के बिछने के पूर्व जबलपुर आदि स्थानों के पड़ोस में लमेटा की तहें कुछ घिस कर पतली

होगई। इसकी अधिक से अधिक मुटाई १५० फुट है। यह छोटा शिमला के पास देखी गई है जो जबलपुर रेलवे स्टेशन से २ मील पूर्व-उत्तर की ओर है। जबलपुर शहर के पड़ोस में लमेटा चट्टानें स्पष्ट दिखाई देती हैं। इस समूह की शिलाओं में चूने का पत्थर, बलुआ पत्थर और चिकनी मिट्टी सम्मिलित है। साधारणतया इन शिलाओं में प्राचीन समय के पशुओं की प्रस्तरी भूत हड्डियों का अभाव है। लेकिन जबलपुर के पास विशालकाय डिनोसारियन और टाइटानो सारस के ढांचों के भग्नावशेष मिले हैं। नर्मदा का लमेटा गाट मार्बलरॉक्स (धुआंधार) से ढाई मील दक्षिणपूर्व की ओर है। यहां इस प्रकार की चट्टानें स्पष्ट दिखाई देती हैं। इसलिये इन चट्टानों का नाम लमेटा रख दिया गया।

गोंडवाना के जबलपुर समूह में चिकनी मिट्टी, मुलायम पीली शेल, मोटे बलुआ पत्थर, मटीले पत्थर और कोयले की पतली तहें पाई जाता हैं। यहां चूने का पत्थर बहुत कम मिलता है। गोंडवान के जबलपुर समूह की शिलाओं की मुटाई १००० फुट से अधिक नहीं है। यह शिलायें धारवार शिलाओं के ऊपर स्थित हैं। इनमें कई फर्न और कोणधारी पौधों के ऐसे भग्नावशेष पाये जाते हैं जो कालान्तर में पत्थर बन गये। लमेटा घाट के पास भीतर का कोयला भी दिखाई देता है। ऊपरी विन्ध्या शिलायें जबलपुर जिले के उत्तरी पश्चिमी भाग में फैली हुई हैं। ऊपरी भाग में ऊपरी भाण्डेर शिलायें हैं। इनमें मोटा और पतला बलुआ पत्थर है। निम्न भाण्डेर शिलायें कहीं कहीं चिकनी मिट्टी से छिपी हैं। इनमें शेल, चूने का पत्थर और

बलुआ पत्थर है। ऊपरी रीवां शिलाओं में विशाल बलुआ पत्थर है जो कैमूर पहाड़ियों में दिखाई देता है। ऊपरी विन्ध्या की ऊपरी भाणेर शिलायें ६५० फुट मोटी हैं। निम्न भाणेर १४५० फुट मोटी है। ऊपरी रीवां शिलायें १००० फुट मोटी हैं।

निम्न विन्ध्या शिलायें ऊपरी विन्ध्या शिलाओं के नीचे हैं। यह जिले के उत्तरी-पूर्वी भाग में पाई जाती है। कटनी से कुछ दूर दक्षिण पश्चिम की ओर प्रस्तर भ्रंश होने से निम्न विन्ध्या शिलायें लुप्त हो जाती हैं। इसी प्रश्तर भ्रंश से रीवां और धारवार शिलायें एक दूसरे से मिल गई हैं। निम्न विन्ध्या शिलाओं के अवस्थायें हैं। रोहतास अवस्था में चूने का पत्थर पाया जाता है। यह चूने का पत्थर कटनी के पास निकाला जाता है। इस लिये इसे कटनी का चूने का पत्थर कहते हैं। खेंजुआ अवस्था जिले के उत्तरी-पूर्वी कोने पर खेजुआ श्रेणी के पास पाई जाती है इसमें शेल और बलुआ पत्थर है। खेंजुआ में चूने के पत्थर की पेटी है। चीनी मिट्टी जिले के उत्तरी-पूर्वी कोने पर बाढ़ी से अमरपुर तक ११ मील तक चली गई है। इसकी दूसरी पेटी ४ मील उत्तर की ओर है। चीनी मिट्टी का रंग कहीं फीका और पीला कहीं कुछ काला है। इसकी उत्पत्ति ज्वालामुखी से हुई है। इससे मिली हुई बासाल अवस्था है। इसमें बलुआ और मिश्रित पत्थर है।

धारवार

धारवार शिलायें जिले के मध्यवर्ती भाग में पाई जाती हैं।

इनके उत्तर में विन्ध्या शिलायें और दक्षिण में लमेटा, लावा आदि शिलायें हैं। वह हिरन और नर्मदा नदियों के बीच वाले त्रिभुज में पाई जाती है। नर्मदा की कांप (कछारी मिट्टी) ने इन्हें कुछ ढक दिया है। कटनी के पड़ोस में इनके ऊपर लेट-राइट बिछी हुई है। यह दक्षिण की धारवार शिलाओं के समान पुरानी है। इसमें लोहा मेगनीज़, तांबा, सीसा आदि कई प्रकार की धातु पाई जाती हैं। इस समूह में संगमरमर, क्वाटज, स्लेट, फिलाइट टाल्कास्किस्ट सोपेस्टोन आदि मिलते हैं। सिहोरा, गोसालपुर में यह शिलायें स्पष्ट दिखाई देती हैं। डोलोमाइट और चूने का पत्थर नर्मदा में भेड़ाघाट और स्लीमानाबाद के पड़ोस में मिलते हैं। इन्हीं में तांबा, सोना, चांदी, सीसा आदि मूल्यवान खनिज मिलते हैं।

दानेदार पत्थर जिले के अलग अलग भागों में उत्तरी-पूर्वी और दक्षिणी-पश्चिमी रेखा में नर्मदाके लमेटा घाट से जबलपुर शहर होते हुये उत्तर-पूर्व की ओर चला गया है। इस दानेदार पत्थर के कारण विशाल नंगी चट्टानें और गोल वीरान पहाड़ियां बन गई हैं। इस प्रकार की एक पहाड़ी पर प्राचीन गोंड-दुर्ग (किला) बना था। जो मदन महल नाम से प्रसिद्ध है यह शिलायें धारबार शिलाओं के समान अति प्राचीन हैं।

खनिज पदार्थ

जितने उपयोगी और जितने अधिक खनिज पदार्थ जबलपुर जिलेमें पाये जाते हैं इससे ज्यादा मध्य प्रान्वके किसी और जिले में नहीं पाये जाते हैं। कटनी में चूने का पत्थर, मुल्तानी मिट्टी

जबलपुर की चीनी मिट्टी और जौला की गेरुये से पूरा लाभ उठाया गया है। मनसकरा का मैंगनीज़ भी सिहोरा रेलवे स्टेशन से बाहर जाता है। मूल्यवान पत्थर नर्मदा घाटी में भेड़ाघाट के पास पाये जाते हैं। स्थानीय संगतराश इनको इकट्ठा करके काटते और चमकीला बनाते हैं। इनसे गुरिया (मणिका) बटन, पेपरवेट (कागज़ दबाने के लिये) आदि सजावट की चीज़ें बनाई जाती हैं।

अल्मूनिया कटनी के पास टिकुरिया की पहाड़ियों में पाई जाती है।

इमारती पत्थर कटनी के पड़ोस में बहुत है। लावा का पत्थर और जबलपुर का बलुआ पत्थर भी घर बनाने के काम आता है। भेड़ाघाट का संगमरमर सजावट के काम आता है।

जबलपुर जिले में कई प्रकार की चिकनी मिट्टी पाई जाती है। कच्छारी चिकनी मिट्टी ईंट बनाने के काम आती है। जबलपुर के पड़ोस की चिकनी मिट्टी बर्न कम्पनी के कारखाने के काम आती है।

लमेटा घाट में घटिया कोयला पाया जाता है। यह जबलपुर शहर से ९ मील दूर है और जबलपुर शहर में ईंटों को पकाने के काम आता है।

सोना, चांदी, तांबा, सीसा स्लीमानाबाद के पास इमलिया में पाया जाता है। इनमें तांबा सबसे अधिक है। इन्हीं से मिला हुआ सोना चांदी और सीसा भी मिलता है। इन्हीं चट्टानों में बेरायट भी मिलता है।

डेलोमाइट भेड़ाघाट और स्लीमानाबाद के पास पाया जाता है। फेल्स्पार सिलौंदी से २ मील पूर्व की ओर सिंगरामपुर में पाया जाता है।

फ्लूर स्पात धातु साफ करने के काम आता है। यह भी स्लीमानाबाद के पास पाया जाता है।

लोहा—जबलपुर ज़िले में अति प्राचीन काल से लोहा निकालने और लोहे से तरह तरह की चीजें बनाने का काम होता रहा है। यहां कच्चा लोहा अधिक है। लोहा साफ करने के लिये विशाल बन हैं। इससे लकड़ी का कोयला बन जाता है। पड़ोस में घनी आबादी है। इसलिये इस जिले में लोहे का काम पुराने समय से ही प्रसिद्ध रहा है। आजकल विदेशी संघर्ष होने पर भी लुहार कई चीजें बनाते हैं। लोहा पुरानी धारवार शिलाओं में पाया जाता है।

चूने का पत्थर निचली विन्ध्या शिलाओं में मिलता है। यह कटनी नाम से प्रसिद्ध है। लमेटा शिलाओं में चूने का पत्थर अपार मात्रा में पाया जाता है।

मैंगनीज़ सिहोरा और गोसलपुर के पड़ोस में बहुत है।

सड़क बनाने के लिये ज़िले में गिट्टी भी बहुत है।

सोपस्टोन या टाल भेराघाट के पास पाया जाता है।

बड़े बड़े बन जबलपुर ज़िले के प्रायः दक्षिणी और पूर्वी भाग में पाये जाते हैं यहां अधिकतर बन पहाड़ी प्रदेश में हैं। यहां पतझड़ वाले वृक्षों का बन है। बन प्रदेश का क्षेत्रफल ३४७ वर्ग मील है। फर्वरी से मई तक गरमी की ऋतु में अधिकतर पेड़ों में पत्तियां नहीं रहतीं। इस समय छोटे छोटे पौदो

और झाड़ियों का उगना बन्द हो जाता है। इसी समय कुछ पेड़ों में बसन्त के बाद नई पत्तियां निकलती हैं। कुछ पेड़ों में सुन्दर फूल फूलते हैं। छिउला पेड़ काली मिट्टी और सिहोरा तहसील की रूपान्तरित शिलाओं में बहुत होता है। फर्वरी और मार्च महीने में इन पेड़ों की ऊपरी डालियों में पत्तियाँ नहीं होतीं। लेकिन हरे हरे ड़ुंठलों के ऊपर नारंगी और लाल रंग के फूल बड़े सुहावने लगते हैं।

गब्दी गनियार की नंगी शाखाओं में इस ऋतु में बड़े बड़े पीले फूल आते हैं। सेमर वृत्त में भी इस ऋतु में पत्तियां नहीं होतीं। लेकिन बड़े बड़े लाल फूल होते हैं। हरुवा पेड़ में भी पत्तियों का अभाव और लाल चमकीले फूलों की अधिकता रहती है। कचनार बृत्त में गर्मी में पत्तियां कम रहती हैं। सफेद और बैंजने फूल बहुत होते हैं। अमलतास में गर्मी के अन्त में नई हरी पत्तियां और पीले फूलों के गुच्छे निकल आते हैं।

धवई लता के लाल फूल प्रायः रंगने के काम आते हैं। गर्मी की ऋतु में इस जिले के कुछ पेड़ों पर पत्तियां बनी रहती हैं। इनमें साल का पेड़ प्रधान है। साल का पेड़ गोंडवाना बलुआ पत्थर की शिलाओं और महानदी की घाटी के समीप में बहुत होता है। मुरवारा तहसील के खितौली रक्षित बन में साल बहुत है। जामुन का पेड़ सब कहीं बहुत है। कुसुम वृत्त में अप्रैल और मई में पत्तियां निकलती हैं पहले इनका रंग लाल रहता है फिर यह हरा हो जाता है। पत्तियों से शून्य काल में हरे बृत्त में कुछ पीलापन लिये हुये हलकी हरी पत्तियां बड़ी

सुहावनी लगती हैं। महुआ के फूलों को इकट्ठा करके यहां के बहुत से निर्धन लोग अपना निर्वाह करते हैं। यहां पीपल और बरगद के विशाल पेड़ भी बहुत हैं। करौंदा काली मिट्टी में बहुत होता है। इसके सफेद फूल बड़े सुगन्धित होते हैं।

वर्षा ऋतु में सब कहीं हरी घास हरी भरी झाड़ियां उग आती हैं। सभी पेड़ हरी पत्तियों से ढक जाते हैं। इस ऋतु में फूलों का प्रायः अभाव रहता है। वर्षा के अन्त में टीक और बरगा पेड़ों में सफेद सफेद फूल दिखाई देते हैं। खुले भागों में छोटे पीले फूलों से लदे हुये बबूल के पेड़ बहुत मिलते हैं। कुछ वृक्ष और लतायें शीतकाल में अपनी पत्तियां बदलती हैं। इनमें गुञ्जा और सेजा मुख्य हैं।

जबलपुर जिले में ललमुँहे बन्दर बहुत हैं। बनोंमें लंगूर पाये जाते हैं,इनका चेहरा काला होता है। इनके कान,हाथ, पांव खाकी होते हैं। इनके चेहरे के चारों ओर बड़े बालों का घेरा होता है। लंगूर २० या अधिक संख्या के झुंड में पाये जाते हैं। इनकी पूंछ बड़ी लम्बी और फुर्तीली होती है। पहले मुरवारा में लंगूर बहुत थे। बहुतसे लंगूर यहां से बम्बई भेज दिये गये। यहाँ कुछ छोटी जाति के बन्दर भी पाये जाते हैं। यहां छिपने के लिये अधिक घना बन है और पीने के लिये सदा पानी मिलता रहता है। वहां चीता पाया जाता है। प्रायः पांच छः चीते एक साथ रहते हैं। चीते की आंख बड़ी तेज़ होती है। उसे दूर का शब्द सुनाई देता है। लेकिन उसमें प्राण शक्ति कम होती है। दूर से उसे मनुष्य की गन्ध नहीं मालूम होती है। चीते का शिकार करने के लिये उसके पड़ोस में किसी स्थान पर भैंसा बांध दिया जाता

है। पहले चीना उसे मारकर चला जाता है। दूसरी बार जब चीता मरे हुये भैंसे को खाने के लिये आता है तब उसकी घात में बैठा हुआ शिकारी चीते को गोली मार कर गिरा देता है, कभी कभी पहली बार ही लोग चीते को हंका कर शिकारी के पास ले जाते हैं। चीते के एक बार दो तीन या अधिक से अधिक पांच बच्चे पैदा होते हैं। एक डेढ़ वर्ष तक चीते का बच्चा मां के पास रहता है कभी कभी चीते के परिवार में लड़ाई हो जाती है। रुष्ट पिता क्रोध में आकर अपने बच्चे को मार कर खा जाता है। पांच वर्ष में चीता युवा हो जाता है। साधा-रणतया वह पन्द्रह बीस वर्ष तक जीवित रहता है। मध्यप्रान्त में कोई कोई चीता ९ फुट २ इंच लम्बा होता है। उसकी पूंछ १ गज़ लम्बी होती है। इसका वजन पांच मन होता है। कोई कोई चीते दस ग्यारह फुट लम्बे होते हैं। चीता बहुत कम धाड़ता है। लेकिन वह पांच छः प्रकार का शब्द करता है। बिना छेड़े हुये वह बहुत कम आक्रमण करता है। लेकिन अपने को छिपाने और अपने शिकार पर अचानक छापा मारने में वह बड़ा चतुर होता है। वह हिरण जंगली सुअर, से ही और पालतू जानवरों को मारकर खाता है। अधिक भूखा होने पर वह मरे हुये पशुओं की लाश को भी खा जाता है। चीता अपनी शिकार को गरदन से पकड़ता है और अपने तेज दांतों से फाड़कर खा जाता है। किसी किसी जानवर को वह अपने पंजे से भी मार डालता है। जब चीता खुली जगह में किसी जानवर को मारता है तो वह उसे घसीट कर आड़ में रख देता है। जहां आड़ नहीं होती है वह अपने दांतों से घास उखाड़कर लाश को ढक देता

है। भोजन करने के बाद चीता ऐसे स्थान पर चला जाता है जहां पानी पास होता है। चीता तैरने में बड़ा निपुण होता है।

तेंदुआ पांच फुट से ७ फुट तक लम्बा होता है। वह पेड़ पर भी चढ़ जाता है। वह मनुष्य से नहीं डरता है और कभी कभी शिकार की खोज में झोपड़ों में भी चला जाता है। छोटे छोटे जंगली जानवरों में जबलपुर ज़िले में शृगाल, नेवला, बन-बिलाव, भेड़िया हैं। शाकाहारियों में नीलगाय और हिरण प्रधान हैं। नर्मदा में मगर और कई प्रकार की मछली और कछुये हैं। ज़िले में सांप भी कई प्रकार के पाये जाते हैं। जबलपुर ज़िले में औसत वर्षा ५० इंच है। जबलपुर तहसील में सब से अधिक (५६ इंच) और सिहोरा में सबसे कम (४१ इंच) वर्षा होती है। मुरवारा में इससे कुछ अधिक सवा सैंतालिस इंच वर्षा होती है। अच्छे वर्षों में यहां लगभग १०० इंच तक वर्षा हुई है। दुर्भिक्ष में केवल यहां ७ इंच वर्षा हुई है। यदि आरम्भ और अन्त (सितम्बर) में अच्छी वर्षा हो जावे तो भी फसलें हो जाती हैं। सितम्बर में वर्षा न होने से गेहूँ नहीं हो सकता। आरम्भ में अच्छी वर्षा न होने से खरीफ की फसल बिगड़ जाती है।

जबलपुर जिले में अधिक से अधिक तापक्रम ११४ अंश और कम से कम तापक्रम ३२ अंश फारेन हाइट देखा गया है। आधे मार्च से गरमी की ऋतु आरम्भ हो जाती है। जून के अंत तक रहती है। उत्तरी भारतवर्ष की तरह यहां ग्रीष्म ऋतु अधिक विकराल नही होती है। लू भी लगातार नहीं चलती है। गरमी ऋतु में भी प्रातः और सन्ध्या का समय सुहावना रहता

है। जनवरी में अधिक से अधिक तापक्रम ७८ अंश और अल्प तापक्रम ४८ अंश देखा गया है। मई सबसे अधिक गरम महीना है। मई का परम तापक्रम १०५ अंश और अल्प तापक्रम ७९ अंश रहता है। वर्षा आरम्भ होने पर तापक्रम कुछ घट जाता है। अतः औसत से जुलाई का परम तापक्रम ८६ अंश और अल्प तापक्रम ७५ अंश रहता है। खुली धूप में मई का तापक्रम ११३ अंश रहता है।

कृषि

जबलपुर जिले में कई प्रकार की मिट्टी है मुन्ड मिट्टी का रंग काला होता है। इसमें बहुत छोटे पौधे और पत्थर के टुकड़े मिले रहते हैं। यह मिट्टी बहुत शीघ्र टूट जाती है। जोतने पर इसकी मिट्टी दूर तक फैल जाती है और कूंड़ चौड़े हो जाते हैं। इसमें गेहूँ बहुत अच्छा होता है। यदि कुछ समय के लिये छोड़ दिया जाय तो इसमें उत्पादन शक्ति फिर आ जाती है। काबर मिट्टी अधिक काली होती है। यह अधिक चिपकनी होती है। इसमें चना बहुत अच्छा होता है। इसमें गेहूँ और चना को प्रायः मिलाकर बोते हैं। मुंड की अपेक्षा काबर मिट्टी अधिक शीघ्र सूख जाती है। पर इसमें प्रायः वर्ष में दो फसलें उगाई जाती हैं। पहली फसल धान की होती है दूसरी फसल रबी की होती है।

गुबरा मिट्टी काबर के समान काली और चिपकनी या लसदार नहीं होती है। इसमें चना की अपेक्षा गेहूँ की फसल अधिक अच्छी होती है। पर इसमें भी प्रायः चना और

गेहूँ को मिलाकर बोते हैं। हर काबर मिट्टी में काबर की अपेक्षा अधिक बड़े डले हो जाते हैं। इसमें पत्थर के टुकड़े मिले रहते हैं। यह अधिक शीघ्र सूख जाती है। इसलिये ऊँचे भागों में इसमें फसलों के उगने का कोई ठीक नहीं रहता है।

दोमटा या दूधिया सेहार में काले रंग के बीच-बीच में सफेद धारी रहती है। खरीफ के बाद इसके छोटे खेतों में रबी की फसल हो जाती है। इसमें गेहूँ चना, धान के अतिरिक्त गन्ना और तरकारियां भी होती हैं। गेहूँ की फसल कार में वर्षा होने पर ही हो सकती है ताम्बर 'मिट्टी कुछ लाल होती है। इसमें, बहुत दिनों तक नमी रहती है। इसमें धान बहुत अच्छा होता है। इसमें नमी अधिक होने के कारण गेहूँ अच्छा नहीं होता है। पांडुआ मिट्टी का रंग कुछ पीला होता है। इसमें धान और गन्ना अच्छा होता है। गेहूँ या चना बहुत कम होता है।

पहाड़ी मिट्टी हल्की ज़मीन है । यह कम उपजाऊ होती है। यह ऊँचे भागों में होती है। यह खरीफ की फसल बोने के काम आती है।

काबर, गुबरा और हर काबर भूमि प्रायः समान रूप से उपजाऊ होती हैं। यह वास्तव में काबर के ही अंग हैं। मुंड का धान दूसरा है।

सेहरा मिट्टी कुछ पीली और रेतीली होती है। इसमें रबी की फसल अच्छी होती है। चारों ओर बांध बन जाने पर धान भी

होता है। भटुआ मिट्टी पहाड़ी ढालों और नालों में होती है। इसमें तिलहन और छोटा ज्वार बाजरा होता है। यह तटरुआ से भी हल्की होती है। यह ६ या ७ वर्ष बिना जोती पड़ी रहती है।

कछार नदियों के किनारे की उपजाऊ भूमि है।

नर बांध खेतों में सींचने के लिये ऊँचे-ऊँचे बांध बनाये जाते हैं। इनसे छोटी नदी, नाले या वर्षा, का जल रोक लिया जाता है। यह बड़े नम होते हैं। इस प्रकार के खेतों में अकाल पड़ने पर भी अच्छी फसल होती है।

बंधवास में बांध तो ऊँचे और पक्के होते हैं। लेकिन इसमें अच्छी वर्षा होने पर ही पानी भरा रहता है।

तगर बंधिया खेतों में कम ऊँचे बांध रहते हैं। धान की खेती कहीं भिलान (निचली भूमि) कहीं समान और कहीं टिकरा (ऊँची भूमि में होती है। गेहूँ जबलपुर ज़िले का प्रधान फसल है। ३ लाख एकड़ से अधिक भूमि में गेहूँ होता है। २ लाख एकड़ से कुछ ऊपर भूमि में कोदों, पौने दो लाख एकड़ में चना और डेढ़ लाख एकड़ भूमि में धान होता है। इस ज़िले में कई जाति का गेहूँ होता है। कुछ गेहूँ बाहर भेज दिया जाता है। शान्ति के समय में यहाँ से कुछ गेहूँ ब्रिटेन और दूसरे योरुपीय देशों को जाता है। जब रात में घी जम कर गाढ़ा होने लगता है तभी कार्तिक महीने में गेहूँ बोया जाता है। गेहूँ को तुषार से बड़ी हानि होती है। (माघ नक्षत्र बरसे असरार, कांरी अगिया मघई तुषार) सितम्बर में

वर्षा होने से कोदों को अगिया से और माघ में तुषार से गेहूं को हानि होती है। गेहूं को इस जिले में प्रायः चना के साथ मिला कर बोते हैं। दस सेर में ७ सेर गेहूं और ३ सेर चना रहता है। जिले की सवा डेढ़ लाख भूमि में चना होता है। हल्दिया चना हल्दी के रंग का कुछ पीला होता है। इमलिया चना कुछ लाल होता है। पर्वतिया चना सफेद होता है और बहुत कम बोया जाता है। जौ बहुत कम (६०,००० एकड़) भूमि में बोया जाता है मटर इससे भी कम (२०,००० एकड़) भूमिमें होती है। भूमि (४०,००० एकड़) में मसूर होती है अलसी ५०,००० एकड़ भूमि में होती है। इसी ऋतु में धनियां, अंडी, लाल मिर्च और आलू भी होते हैं।

खरीफ की फ़सल में धान प्रधान है। धान (बसमतिया लखोवा, करधना आदि) प्रकार का होता है। नर्मदा, हिरन और दूसरी छोटी छोटी नदियों के पड़ोस में ज्वार होती है। ज्वार ९ प्रकार की होती है कांस, कुंडी और अगिया से ज्वार को बड़ी हानि होती है।

तूर या अरहर प्रायः ज्वार या कपास के साथ बोई जाती है। बाजरा की भूमि को केवल एक बार जोतते हैं। मकई की खेती बढ़ रही है। प्रायः १०,००० एकड़ भूमि में मकई होती है। १३,००० एकड़ भूमि में उर्द और मूंग की फसल होती है। निर्धन किसानोंका भोजन कोदों है। यह सभी प्रकार की भूमि में बोया जाता है जून या जुलाई में बोया जाता है। नवम्बर या दिसम्बर में फसल काटी जाती है। कुटकी अधिक भूमि में नहीं

बोई जाती हैं। कहावत है "तीन पाख दो पानी आई कुटक दैरानी" दो पानी मिलने पर ३ पाख में कुटकी के दाने तैयार हो जाते हैं।

तिल अधिक महत्व का है। ८२,००० एकड़ भूमि में तिल होता है। तिल काला, सफेद और कुछ लाल होता है।

ईख की फ़सल केवल एक लाख एकड़ भूमि में होती है। १२,००० एकड़ भूमि में कपास होती है। यह जबलपुर और सिहोरा तहसीलों के कंकार प्रदेश में होती है। प्रायः यह अरहर (तूर) के साथ मिला कर बोई जाती है। इसकी दो बार निराई की जाती है। अक्टूबर में प्रबल वर्षा होने पर कपास की फसल खराब हो जाती है। सामा, काकुन सकल (सकरकन्द) सिंघाड़ा, गाजर आदि छोटी छोटी फसलें भी होती हैं। कुछ सन भी उगाया जाता है। इस ज़िले में सिंचाई कुओं और तालाबों से होती है।

इस ज़िले में गाय-बैलों की संख्या ३ लाख से ऊपर है। भैंस लगभग ५०,००० हैं। बकरे बकरियां ५२,००० हैं। घोड़े १८००० और भेड़ें १५,००० हैं। गधे ५०० और खच्चर केवल १८५ हैं।

कारबार

पहले इस ज़िले में सूत कातने और कपड़ा बुनने का काम बहुत होता था। मिलों के संघर्ष से इस काम को बड़ा धक्का पहुँचा। इस समय इस काम में केवल ६००० मनुष्य लगे हुये हैं। सूत कातने के काम को सबसे अधिक धक्का लगा है। यहां लगभग ५०,००० मन सूत बम्बई से आता है कुछ सूत

जबलपुर की मिल से मील जाता है। जबलपुर,गढ़ा और मझोली सूत कातने,बुनने के प्रधान केन्द्र हैं। कोरी और मेहरा मोटा कपड़ा बुनते हैं। जुलाहे और कोष्टा अच्छा कपड़ा बुनते हैं। स्त्रियां हाथ की बुनी रंगीन सारियां बहुत पहनती हैं। कुछ खादीकी धोती बुनी जाती हैं। गड़रिये मोटे ऊनी कम्बल बुनते हैं। जबलपुर जेलमें सूती दरियां और कालीनें बुनी जाती हैं। कई स्थानों में कपड़ा रंगने का काम होता है। इनमें जबलपुर. गढ़ा,शहपुरा, बिजैराघोगढ़ इन्द्राना कुम्ही, मझोली और गोसलपुर प्रधान हैं। रंगने का काम छीपा और रंगरेज़ करते हैं। पहले आल पौधे की जड़ से रंग तैयारकिया जाता था। अब सब रंग विदेशों से आता है। जिस कपड़ेको रंगना होता है उसे पहले छीपा लोग हरा गोंद और फिटकरीके पानी में भिगोते हैं। फिर उससे सारी,रजाई, गदेला, जाजम आदि कपड़े रंगे जाते हैं। इस ज़िलेमें लगभग डेढ़ हज़ार सुनार सोने-चांदी के आभूषण बनाते हैं। यहां ७०० ठठेरे रहते हैं जो तांबे पीतल और कांसे के बर्तन बनाते हैं। पनागर और मुरवारा इस कार-बार के प्रधान केन्द्र हैं। ज़िले के कई स्थानों में लुहार कच्चा लोहा साफ करने और उससे तरह तरह का सामान बनाने का काम करते हैं।

बर्न कम्पिनी का चिकनी मिट्टी का कारखाना भारतवर्ष भर में प्रसिद्ध है। इस कारखाने में आग की भट्टी की ईंटें, पाइप, टाइल, घड़े आदि बर्तन बनाये जाते हैं। इस कारखाने को आरम्भ से २५ प्रतिशत से अधिक लाभ प्रतिवर्ष होता रहा है। इस कारखाने की चिमनी विशेष प्रकार की है। इसका सब धुआं बाहर निकाल दिया जाता है और लपट बर्तनों को नहीं

छूती है। इनकी चोटी पर दुहरी छत है। भट्टियों की लपटें फर्श के निचली भाग को छूती हैं। फिर वे ऊपर को उठती हैं और दो छतों के बीच वाले भाग को गरम कर देती है। इस प्रकार मिट्टी के बर्तन धुआं, धूल आदि सभी मैली चीजों से अलग रहते हैं।

बर्तनों को पहले तेज़ आंच में लगातार ४ दिन तक गरम किया जाता है। फिर वे ३ दिन तक धीरे धीरे ठंडे होते हैं। इसके बाद बर्तन निकाल लिये जाते हैं और चमक देने वाले घोल या द्रव पदार्थ में डुबोये जाते हैं। यह द्रव पदार्थ इंगलैंड से आता है। इसके बर्तन फिर पांच दिन तक पकाये जाते हैं। इससे चमकीला द्रव पदार्थ एक दम बर्तन में मिल जाता है। निकलने पर बर्तन एक दम बिकने के लिये तैयार होते हैं।

परफेक्ट पाटरी वर्क्स को डेढ़ लाख रुपये की लागत से बर्न कम्पिनी के मैनेजर ने १९०५ ई० में आरम्भ किया था। यह रुपया राजा गोकुलदास ने लगाया था। आगे यह रक़म बढ़ाकर दो लाख कर दी गई। इसमें वह सब सामान तैयार किया जाता है जो बर्न कम्पिनी और कानपुर की फ्रीज़ोनी कम्पिनी तैयार करती है। गांव के कुम्हार पानी और अनाज रखने के बर्तन, चिलम और डिब्बी (दीवा) आदि बनाते हैं। मिट्टी के बर्तन आदि बनाने के काम में लगभग ६००० मनुष्य लगे हुये हैं।

पत्थर और संगमरमर का सामान बनाने में प्रायः १२०० मनुष्य लगे हैं। संगमरमर भेराघाट के पास पाया जाता है। इसको गढ़ने और कई तरह की चीजें बनाने का काम जबलपुर

शहर में होता है। भारी पत्थर पुल और घर बनाने के काम आता है।

मुरवारा का पत्थर इलाहाबाद, कलकत्ता आदि सुदूर स्थित नगरों को जाता है। ईस्ट इंडिया और बंगाल-नागपुर रेलवे लाइन के अधिकतर पुलों में मुड़वारा का पत्थर लगा है। गौरा (मुलायम) पत्थर भेराघाट और सगरा में पाया जाता है। इससे तश्तरी, प्याले, महादेव के लिंग और बटन बनाये जाते हैं। काटंगी के पत्थर से तेवार में आटा पीसने की चक्कियां, खरल और विशाल मूर्तियां बनाई जाती हैं। चूना बनाने का काम कई स्थानों में होता है। कटनी मुरवारा में लोहा आदि धातु की बनी हुई चद्दरों और दूसरी चीज़ों को रंगने के लिये रंग बनाया जाता है। यह धाऊ (लोहे की मिट्टी) और अलसी के तेल से बनता है। रामरज भी बनाया जाता है। कचरास में शीशे की चूड़ियां बनती हैं। काटंगी के सीसगर बोतलें और शीशियां बनाते हैं। लखेरे लोग लाख की चूड़ियां बनाते हैं। यह चूड़ियां श्रावणी के दिन रक्षा बन्धन के अवसर पर पहनी जाती हैं। बढ़ई लोग तरह तरह के लकड़ी का सामान बनाते हैं। मोची चमड़े से जूते और दूसरी चीजें बनाते हैं।

संक्षिप्त इतिहास

सिहारा तहसील में रूपनाथ का शिलालेख प्रायः ईसा से ३०० वर्ष पूर्व का है। इसे सम्राट् अशोक ने खुदवाया था। इसमे सम्राट् अशोक ने छोटे बड़े सभों को परिश्रम करने का उपदेश दिया है। मौर्य साम्राज्य के अन्त हो जाने पर इस जिले में सुंग षंश का राज्य हुआ। यह साम्राज्य के दक्षिण में नर्मदा तक फैला हुआ था। ईसा से २७ वर्ष पूर्व आन्ध्र कासा तवाहन साम्राज्य बंगाल की खाड़ी से अरब सागर तक फैल गया। दक्षिण का समूचा पठार इसी साम्राज्य के अन्तर्गत प्रायः ४०० वर्ष तक रहा। चौथी शताब्दी में पाटलीपुत्र में गुप्त साम्राज्य की स्थापना हुई। इस वंश के राजा चन्द्रगुप्त ने नया सम्बत् चलाया। उसके उत्तराधिकारी समुद्रगुप्त ने इसे और भी बढ़ाया था। उत्तरी भारतवर्ष को जीतने के बाद उसने महानदी की घाटी के दक्षिण-कोशल को जीता। उसने उड़ीसा और मध्यप्रांत के बन प्रदेश को भी जीता। इस विजय के समय जबलपुर का जिला परिव्राजक महाराज के राज्य में सम्मिलित था। यह राजा गुप्त सम्राट् को कर देता था वह मुरवारा तहसील के बिजै राघोगढ़ के समीप रहता था। ४७५ से ५२८ ईस्वी तक इन राजाओं के यहां ६ शिला लेख मिले हैं। एक लेख में (जो बेतूल के मालगुजार के पास मिला) त्रिपुरी प्रान्त के प्रस्तर वाटक (पटपुरा) और द्वार वटिका द्वारा गांवों का उल्लेख है जो विल्हारी के पास मुरवारा तहसील में स्थित है। त्रिपुरी नगर में कालाचूरी राजाओं की राजधानी थी। यह त्रिपुरी जबलपुर से ६ मील की दूरी पर उस स्थान पर बसा था जहां

इस समय तेवार गांव है। समीपवर्ती राज्य का नाम भी त्रिपुरी था।

विजै राघोगढ़ की सीमा के पास उच्च कल्प राजा राज्य करते थे। यहां के राजा गुप्त सम्राटों को कर देते थे। हूणों के आक्रमण से गुप्त साम्राज्य क्षीण होने लगा था। सागर ज़िले में एक शिला लेख मिला है। इससे सिद्ध होता है कि इस ज़िले में भी हूणों का आक्रमण हुआ था।

जबलपुर के समीप का प्रदेश दाभाल (दाहल) कहलाता था। आगे चलकर ५२८ तक हूण लोग भारत वर्ष के बाहर भगा दिये गये। जब कालचूड़ राजा शक्तिशाली हुये तो दाभाल चेदिराज्य का अंग बन गया। चेदिराज्य का उल्लेख महाभारत में भी आता है। उच्च कल्प राजा कालचूड़ि राजाओं के सहायक और मित्र बन गये थे। त्रितसौर्य में कालचूड़ि राजाओं की राजधानी थी। ९०० ईस्वी में त्रिपुरी राजधानी हुई। यहां पर उन्होंने ३०० वर्ष शासन किया।

कोकल्ल प्रथम चंद्रवंश के अंतर्गत हैहयवंश का एक धर्मात्मा राजा था। उसका बेटा मुग्धतुङ्ग अथवा प्रसिद्ध धवल त्रिपुरी का प्रथम राजा हुआ। उसने कोशल नरेश से पालि जीत लिया। उसका राज्य पूर्वी समुद्र-तट तक पहुँच गया। उसके दो पुत्र थे। उसके मरने के पहले उसके बेटे बालहर्ष ने फिर केयूर वर्ष अथवा युवराजदेव ने राज्य किया। युवराजदेव ने कई युद्ध जीते। लेकिन चन्देल राजा यशोवर्मा ने चेदि राजाओं को हरा दिया।

युवराजदेव प्रथम के मरने पर उसका बेटा लक्ष्मणराज सिंहासन पर बैठा। उसने पश्चिमी तट तक समस्त प्रदेश को जीत लिया। यहीं समुद्र-स्नान करके उसने गुजरात में सोमेश्वर की पूजा की। लक्ष्मणराज के बाद उसका बड़ा बेटा शंकरगण राजा हुआ। उसके बाद उसका छोटा भाई युवराज द्वितीय राजा हुआ। कहते हैं मालव के राजा वाकपति देव ने युवराज को हराकर उसकी राजधानी त्रिपुरी पर अधिकार कर लिया था। पर अन्त में मालव नरेश मारा गया। युवराज द्वितीय के बाद कोकल्लदेव द्वितीय राजा हुआ। फिर कोकल्लदेव द्वितीय का बेटा गांगेयदेव सिंहासन पर बैठा। जबलपुर के एक ताम्रलेख के अनुसार गांगेयदेव विक्रमादित्य भी कहलाता था। वह सचमुच बड़ा पराक्रमी राजा था। तिरहुत में भी उसका आधिपत्य स्वीकार कर लिया गया था। उसने सोने, चांदी और तांबे के सिक्के ढलवाये। वह प्रयाग में वट वृक्ष के नीचे रहता था। वहीं १०४० ई० में उसकी मृत्यु हुई। गांगेयदेव के मरने पर उसका बेटा कर्णदेव राजा हुआ। उसने तेवार (त्रिपुरी) के पास कर्णावती नगरी को बसाया जिसे आजकल करनबेल कहते हैं। काशी में उसने कर्णमेरु का मन्दिर बनवाया। अल्हनादेवी के भेराघाट के शिलालेख के अनुसार उसने पाण्ड्य, मुरल, कुङ्ग, वंग, कलिंग, कीर, और हूण शासकों का विरोध किया। १०६० ई० में उसने गुजरात के राजा भीम से मिलकर मालव के राजा भोज को हराया। इसी समय मुरवारा तहसील का बिल्हारी स्थान चन्देल राजदूतों के हाथ में चला गया। उन लोगों ने यहां कई मन्दिर बनवाये। कर्णदेव ने हूण राजकुमारी अवल्लादेवी से

विवाह किया। उसके बेटे यश कर्णदेव के समय (११२० ईस्वी) राज्य का कुछ भाग कन्नौज के राजा के हाथ में चला गया। यश-कर्ण ने आन्ध्र के राजा को हराया और चम्पाभार को नष्ट किया। कहते हैं यह रायपुर ज़िले में राजिम के पास चम्पा-भार स्थान था। यशकर्ण देव के मरने पर उसका बेटा जय कर्णदेव राजा हुआ। इसके पश्चात् उसका बेटा नरसिंहदेव राजा हुआ।

मंडला ज़िले के बन प्रदेश में गोंड जाति के लोग अधिक रहते हैं। उनका नेता जदुराय गोदावरी के पास रहता था। पहले उसने कालचूड़ि राजा के यहां नौकरी की। फिर उसने गोंड लोगों को एक सूत्र में मिलाया। उसने सुरभि पाठक को अपना मन्त्री बनाया। गोंड लोगों का एक शिला लेख रामनगर में मिला जो १६६७ ईस्वी में गंग राजा हृदयसाह के समय में लिखा गया था। संग्राम शाह से पूर्व गोंड राज्य में केवल तीन चार (गढ़) ज़िले शामिल थे। संग्राम साह ने अपना राज्य बढ़ाकर ५२ ज़िले कर लिये। इसके राज्य में सागर, दमोह, भोपाल, नर्मदा घाटी और सतपुड़ा पठार के कुछ भाग शामिल थे। संग्रामसिंह ने नरसिंहपुर के पास चौरागढ़ (दुर्ग) बनवाया और गढ़ा के समीप संग्राम सागर (झील) बनवाया। इसके किनारे पर उसने भैरों का बाजना मठ बनवाया। संग्रामसाह गोंड राजाओं में सर्व प्रसिद्ध है। उसके बेटे दलपत साह ने सिगोरगढ़ में अपनी राजधानी बनाई जो सागर और गढ़ा के मध्य में स्थित है। दलपतसाह ने महोबा के चन्देल राजा पर चढ़ाई की और उसकी बेटी दुर्गावती से व्याह किया। चार वर्ष

के बाद वह मर गया। उसका बेटा वीर नारायण केवल तीन वर्ष का था। उसके बालकाल में उसकी वीर माता ने राज प्रबंध किया। गढ़ा के पास उसने रानी ताल खुदवाया। उसने गढ़ा और मंडला के और भी कई उत्तम काम किये। कहते हैं उसके यहां १४०० हाथी थे। २५६४ में कड़ा और मानिकपुर के मुग़ल सूबेदार आसफ खां ने अकारण ही मंडला की अबला रानी पर चढ़ाई की। सिगोरगढ़ के पास रानी वीरता से लड़ी। लेकिन यहां उसकी सेना हार गई। इसके बाद मंडला के मार्ग में एक दर्रे के पास जब उसकी सेना फिर हारी तो उस वीर रानी ने अपने गले में कटार भोंक कर प्राणान्त कर लिया। उसका बालक वीर नारायण चौरागढ़ के किले में पहुँचा दिया गया था। आसफ खां ने यहां भी चढ़ाई की। गड़बड़ी में वीर नारायण दब कर मर गया। स्त्रियों ने चिता जलाकर अपने को भस्म कर लिया। केवल दो स्त्रियां बचीं थीं। वे अकबर के रनिवास में भेज दी गईं। आसफ खां के हाथ भारी लूट लगी। १०१ बड़े बड़े हंडे सोने के सिक्कों से भरे थे। इनके अतिरिक्त हीरा, जवाहिरात, सोने चांदी के बर्तन और देवताओं की मूर्तियां उसके हाथ लगीं। इस लूट में उसने केवल कुछ भाग सम्राट् को दिया। १००० हाथियों में केवल ३०० हाथी उसने दिल्ली को भेजे। इस विजय ने मुग़लों के लिये दक्षिण का द्वार खोल दिया।

आसफ खां के चले जाने पर दलपत का भाई चन्द्रसाह गढ़ मंडला का राजा हुआ। लेकिन उसे ११ ज़िले अकबर को सौंपने पड़े जिनसे आगे चलकर भोपाल राज्य बना। चन्द्रसाह

के बाद उसका बेटा मधुकर साह अपने बड़े भाई का बध करके राजा हुआ। इसके प्रायश्चित में उसने अपने आपको सूखे पीपल वृक्ष के खोखले में जाकर भस्म कर डाला।

वह प्रथम गोंड राजा था। जो दिल्ली दरबार में गया और वहां उसने मुग़ल बादशाह के सामने अपना सिर झुकाया। उसके बड़े बेटे और ओरछा नरेश के बीच में दिल्ली में वैमनस्य होगया। ओरछा नरेश के बेटे जुझारसिंह ने प्रेमनारायण को चौरागढ़ में घेर लिया। धोखे में उसे मार कर गढ़ पर उसने अधिकार कर लिया। प्रेमनारायण के बेटे हृदयसाह ने जुझार सिंह का बध करके बदला चुकाया। इस कार्य में भोपाल के सरदार ने सहायता दी थी इसलिये पुरस्कार के रूप में उसे ओपुदगढ़ का जिला मिला जिसमें ३०० गांव थे। इसके बाद हृदयशाह ने अपने राज्य की दशा सुधारी। उसने बड़े बड़े बगीचे लगवाये। सबसे बड़ा बाग उस स्थान पर लगवाया जहां इस समय जबलपुर की छावनी है। इसमें एक लाख वृक्ष लगाये गये थे। इसी से इसे लखेरी कहते हैं। इनमें बहुत से पेड़ गिर गये या काट डाले गये। गढ़ा के पास उसने गंगासागर खुद-वाया। उसने ७० वर्ष से ऊपर राज्य किया और रामनगर का शिला लेख खुदवाया।

उसके बेटे छत्रशाह ने ७ वर्ष तक राज्य किया। उसके मरने पर उसका बेटा केसरीसिंह राजा हुआ। लेकिन उसके चाचा हरीसिंह ने स्वयं राजा बनने के उद्देश्य से भतीजे को धोखा देकर मार डाला। लेकिन प्रजा ने उसे राजा न माना। केसरी

सिंह का ७ वर्ष का बेटा नरेन्द्रसाह राजा बनाया गया। उसने युद्ध में हरीसिंह को मार डाला और उसके बेटे पहाड़सिंह को भगा दिया। पहाड़सिंह वीर था। प्रजा को विमुख देख कर वह औरंगज़ेब से जा मिला जो इस समय बीजापुर का घेरा डाल रहा था। इसमें पहाड़सिंह ने बड़ी वीरता दिखलाई। विजय प्राप्त हो जाने पर मंडला लेने के लिये एक सेना पहाड़ सिंह के साथ भेज दी गई। फतेहपुर के पास दूधी नदी के किनारे युद्ध हुआ। इसमें नरेन्द्रसाह की हार हुई। लेकिन मुग़ल सेना के लौट जाने पर सोहागपुर की लड़ाई में पहाड़सिंह मारा गया। उसके दोनों बेटे युद्ध से भाग गये। मुग़लों और मुसलमान सरदारों की सहायता प्राप्त करने के लिये वे मुसलमान हो गये। सैनिक सहायता लेकर वे नर्मदा की घाटी को फिर लौट आये लेकिन लड़ाई में दोनों मारे गये। इस विजय से नरेन्द्रमाह कुछ निश्चिन्त हो गया था लेकिन उसके दो पठान जागीरदारों ने (जिन्हें उसने पुरस्कार के रूपमें नरसिंहपुर और चौरी (सिउनी) की जागीरें दी थीं) विद्रोह का झंडा उठाया। नरेन्द्रसाह ने देवगढ़ के प्रसिद्ध राजा बख्त बुलन्द की सहायता से विद्रोहियों को हरा दिया। इस सहायता के बदले में उसने चैारी (सिउनी) डोंगरताल और घुनसौर के जिले बख्त बुलन्द को दे दिये। इन्हीं लड़ाइयों में उसने बुन्देल खण्ड के राजा छत्रसाल को सैनिक सहायता के बदले में, पवई, शाहनगर, गढ़पहरा, दमोह, रेहली, इटावा और खिमलास के जिले दे दिये। इनसे आगे चलकर सागर प्रान्त बना। पांच जिले दिल्ली सम्राट् को दे दिये गये थे चालीस वर्ष शासन करने के बाद १७३१ में उसका

देहान्त होगया। उसका बेटा महाराज साह राजा हुआ। ग्यारह वर्ष शान्तिपूर्वक शासन करने के बाद यहां पेशवा का आक्रमण हुआ।

महाराजसाह ने मंडला के गढ़ (किले) में शरण ली। लेकिन वह मारा गया। बाजीराव ने उसके बड़े बेटे शिवराज साह को इस शर्त पर राजा बनाया कि वह प्रतिवर्ष ७ लाख रुपये की चौथ दिया करेगा। कुछ जिले नागपुर के भोंसला राजा ने छीन लिये। इस प्रकार गोंड राजा के पास केवल २३ गढ़ बचे। १७४९ में शिवराज मर गया। उसका बेटा दुर्जनसाह राजा हुआ। वह सचमुच दुर्जन था। उसके चाचा निजामसाह ने उसे धोखा देकर मार डाला। पेशवा को प्रसन्न करने के लिये निजाम साह ने पनागर, दिउरी, और गौरझामर के जिले उसे दे दिये। १७७६ ई० में गढ़ा में निजामसाह की मृत्यु हो गई। इसके बाद राजसिंहासन के लिये यहां गृह-कलह फैली। सिंहासन पाने की इच्छा से एक उत्तराधिकारी मरहठों से भी लड़ बैठा। अन्तिम राजा १७८९ में मरहठों का बन्दी होकर सागर जिले में खुरई के किले में मर गया। इस प्रकार गढ़ मंडला के राजवंश का अन्त होगया।

सागर का शासन १७ वर्ष रहा। इसके बाद मरहठों ने जबलपुर में राजधानी बनाई और वहीं एक छोटा किला बनवाया जहां इस समय जबलपुर शहर का चारदीवारी वाला भाग है। इसे लार्ड विलियम बैंटिक की स्मृति में प्रायः लार्डगंज कहते हैं। १७९८ में जबलपुर और मंडला के जिले नागपुर के रघुजी द्वितीय को दे दिये। १८१७ में सीतावल्दी की लड़ाई के

बाद यहां ब्रिटिश अधिकार होगया'। १८३५ में सागर और नर्मदा प्रदेश (जिसमें जबलपुर भी शामिल था उत्तरी पश्चिमी (वर्तमान संयुक्त) प्रान्त में मिला दिये गये। १८४२ ई० में ब्रिटिश न्यायालयों से असन्तुष्ट होकर बुन्देले जमींदारों ने विद्रोह का झंडा उठाया। विद्रोह एक वर्ष तक रहा। इसके बाद यह प्रदेश उत्तरी-पश्चिमी प्रान्त से अलग कर दिया गया। लेकिन १८५२ में यह फिर संयुक्तप्रान्त में मिला दिया गया। गदर के बाद १८६१ में मध्यप्रान्त बनाया गया। उसी में जबलपुर भी शामिल कर दिया गया।

एक गांव से दूसरे गांव में चपाती बांट कर विद्रोह का संगठन किया गया। जो लोग विद्रोह में सम्मिलित होना चाहते थे वे चपाती ले लेते थे और दूसरों को बांट देते थे। यह गुप्त संगठन अधिकारियों की समझ में न आया। १ मई को जबलपुर में मेरठ के विद्रोह का समाचार पहुँचा। ३ जुलाई को सागर में विद्रोह हुआ। इससे पहले ही जबलपुर में विद्रोह के चिन्ह दिखाई देने लगे थे। कमिश्नर के बंगले में खाने पीने का सामान इकट्ठा किया गया। सब ईसाई एजेन्सी घर में बुला लिये गये। दरवाजे रोक दिये गये। बाहरी भाग में बालू से भरे हुये बोरों को रखकर उनकी दीवार बना दी गई। गोरी स्त्रियों ने बारूद के थैले बनाये। दो तोपें भी रख ली गईं। लूट मार को रोकने के लिये भिन्न २ तहसीलों में सेना की टोलियां भेज दी गईं। जबलपुर में अंग्रेजों को नष्ट करने के अपराध में बृद्ध गोंड राजा और उसके पुत्र को गोली से उड़ा दिया गया। इसके बाद जबलपुर से कुछ सिपाही पाटन को चले आये और

वहां अपने साथियों से मिलकर उन्होंने अपने सेनापति को नजर बन्द कर लिया। दूसरे दिन उन्होंने दिल्ली की ओर प्रस्थान करने की इच्छा प्रकट की और इस शर्त पर अंग्रेज सेनापति को छोड़ने का निश्चय किया कि उनके १० साथी जो जबलपुर में छूट गये थे उनके पास लौटा दिये जावें। इस शर्त को अस्वीकार किया गया। जब उनपर आक्रमण किया गया तो उन्होंने सेनापति को मार डाला। सितम्बर के अंत में विद्रोह को दबाने के लिये मद्रास की सेना यहां आई। २५ सितम्बर को मद्रासी सेना ने शंग्रामपुर में पड़ाव डाला। संग्रामपुर और जबलपुर के बीच में काटंगी के पास हिरन नदी बहती है। काटंगी की लड़ाई में विद्रोहियों को भारी हानि उठानी पड़ी। इसके बाद उन्होंने पड़ोस के देश को लूटा और कैदियों को मुक्त कर दिया।

उन्होंने सागर से ३० मील की दूरी पर गढ़ कोट पर अधिकार कर लिया। दूर दूर के स्थानों में मुट्ठी भर अंग्रेज इस प्रकार बन्द थे कि वे कुछ नहीं कर सकते थे। जबलपुर के पास एक लड़ाई में मद्रासी सेना ने विद्रोहियों को हराया। लेकिन उनका अंग्रेज सेना पति मारा गया। दूसरी लड़ाई में दूसरा अंग्रेज सेनापति मारा गया। एक लड़ाई में हार जाने पर विद्रोही जंगल के दूसरे भाग में फिर इकट्ठे हो जाते थे। विजैराघोगढ़ के विद्रोही राजा के पास पचीस तीस अच्छी तोपें थीं। उसने कुछ समय तक मिर्जापुर की सड़क को एक दम बन्द कर दिया। रीवां और जबलपुर की ब्रिटिश सेनाओं के संयुक्त प्रयत्न से १८५८ के जनवरी मास में यह सड़क फिर खुली। बरगी के विद्रोहियों ने भी बड़ा कष्ट दिया। लेकिन सांकल

(नरसिंहपुर) को ओरसे आनेवाली अंग्रेज़ी सेनाने उनके नेता को पकड़ लिया और मार डाला। इसके बाद नर्मदाके दक्षिणमें कोई विद्रोही दिखाई नहीं देता था। सर ह्यू रोज़ ने १८५८ में सागर से बढ़कर राहतगढ़ और गढ़ कोट के किलों को छीन कर कई स्थानों पर विद्रोहियों को हराया। मई महीने के पूर्व कहीं कहीं लूट मार होतो रही। मई में क्षमा प्रदान करने की घोषणा हुई। इससे बहुत से विद्रोहियों ने आत्म समर्पण कर दिया। अगस्त तक विद्रोह एक दम शान्त होगया।

विजै राघोगढ़ वास्तव में मैहर राज्य का दक्षिणी आधा राज्य था। इसे बेनी हज़ारी नाम के एक जोगी ने स्थापित किया था। पन्ना के राजा का वह एक किलेदार था। १७५१ में उसे एक जागीर मिली। उसका बेटा दुर्जनसिंह पन्ना से पृथक हो गया। १८०६ में उसने अंग्रेज़ों से अलग सन्धि की। उसके मरने पर उसके बेटे विशनसिंह और प्रयाग दास आपस में लड़ने लगे। अतः राज्य दो भागों में बट गया। बड़े भाई ने मैहर का प्रबन्ध अच्छा न किया। छोटे भाई ने विजैराघोगढ़ का अच्छा प्रबन्ध किया। प्रयाग दास के मरने पर उसका बेटा बहुत ही छोटी अवस्था में गद्दी पर बैठा। अतः ब्रिटिश सरकार ने विजैराघोगढ़ का प्रबन्ध अपने हाथ में ले लिया। बड़ा होने पर इस राजकुमार ने विद्रोह का झंडा उठाया। उसे आजन्म कारावास का दंड दिया गया। लेकिन वह मार्ग में ही बनारस में मर गया। १८६५ में विजैराघोगढ़ का राज्य अंग्रेज़ी राज्य में मिला लिया गया।

अभना गांव सिहोरा से १२ मील उत्तर पश्चिम की ओर

सोहार नदी के किनारे खेंजुआ पहाड़ी की तलहटी में स्थित है। इसके पास बिजना पहाड़ी पर सुंदर ताल है। इसी पर एक पुराने किले का खंडहर है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। कहते हैं गोंड राजा निजामसाह ने इसे बसाया था। अमदा गांव केमूर की चोटी पर बहुरीबंद से ७ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। इसके पड़ोस में कई सती टीले हैं। एक पर सम्बत् १६५१ (१५९४ ईस्वी) का लेख खुदा है। यहां आल्हा का बनवाया हुआ एक पुराना गढ़ है।

बचैयागांव सिहोरा से १० मील उत्तर-पश्चिम .की ओर है। गांव सोहार और पटैर नदियों के पास बसा है। यहां एक बड़ा ताल है जहां सिंघाड़े बहुत होते हैं। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। पड़ोस में लाल गेरुआ बहुत निकाला जाता है।

बाघ राजी (यह नाम बाघ या चीते का अपभ्रंश है) का बड़ा गांव पहाड़ियों के बीच में रूपान्तरित शिलाओं के आखात में स्थित है। यह जबलपुर शहर से २५ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। पहले यहां लोहे का व्यापार अधिक होता था। लेकिन यहां के लोहार विदेशी लुहारों का सामना न कर सके अतः वे जबल-पुर शहर में आकर बस गये और विदेशी लोहे की चद्दरों से क़ड़ाही और दूसरा सामान बनाने लगे। यहां प्राइमरी स्कूल, डाकखाना और सरकारी बन का नाका है। प्रति शनिवार को बाजार लगता है।

बहुरीबन्द गाँव सचमुच बहुत बांधों का गांव है। यह सिहोरा से १५ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। यह सिहोरा स्टेशन से १७ मील और कटनी बीना लाइन की सलैया स्टेशन

से १८ मील दूर है। इसके पड़ोस में कई पुराने खंडहर हैं। यहीं १२ फुट ऊंची ६ फुट चौड़ी एक विशाल जैन मूर्ति नग्न खड़ी है। उत्तर की ओर एक बड़ा ताल है। यहीं कई छोटे २ मन्दिर बने हैं। यहीं विष्णु और दूसरे अवतारों की मूर्तियां हैं। यहां औलिया पीर का मकबरा है। जिसके खर्च के लिये सरकार ने किसान पाटन का मौजा माफी में दिया है। यहां एक प्राइमरी स्कूल डाकखाना और थाना है। बुधवार को बाजार लगता है। लाख का व्यापार बहुत होता है।

बकल का बड़ा गांव सिहोरा-सलैया सड़क पर स्थित है। यह एक व्यापारिक केन्द्र है। शुक्रवार को बाजार लगता है इसमें पड़ोस का चावल बहुत बिकता है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है।

बरेला कलां जबलपुर से १० मील दक्षिण-पूर्व की ओर मंडला को जानेवाली सड़क पर स्थित है। यहां मंगलवार को बाजार लगता है। इसमें पड़ोस का अनाज बहुत बिकता है। पास में एक बड़ा ताल है जिसमें मछलियां मारी जाती हैं। यहां प्राइमरी स्कूल थाना और डाकखाना है। यहां चर्च आफ इंगलैण्ड जनाना मिशन का अनाथालय और फौजी पड़ाव है। मंडला के गोंड राजा ने इस प्राचीन नगर को बसाया था। पहले यहां के लुहार बढ़िया बन्दूकें और तलवारें बनाते थे। दो तीन लुहारों को इस समय भी देशी बन्दूक और तलवार बनाने के लिये लाइसेंस की आज्ञा मिली है। गुप्ती, चाकू, सरौता आदि बहुत से लुहार बनाते हैं।

बड़गांव पहले सचमुच बड़ा गांव था। यहां पाँचवीं शताब्दी का बना हुआ पुराना सोमनाथ का मन्दिर है। यह मन्दिर और-

गज़ेब के आक्रमण से बच गया। यहां कई पुराने हिन्दू और जैन भग्नावशेष हैं। कटनी नदी यहां से १ मील पश्चिम की ओर बहती है और पन्ना राज्य और मुरवारा तहसील के बीच में प्राकृतिक सीमा बनाती है। इस कटनी नदी के किनारे दो सुंदर मन्दिरों के भग्नावशेष हैं। इन पत्थरों पर बढ़िया गढ़ाई है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। सोमवार को बाजार लगता है।

बरगी गांव जबलपुर से १४ मील दक्षिण की ओर ग्रेट नर्दन रोड सड़क पर स्थित है। यह बंगाल नागपुर रेलवे को सतपुड़ा शाखा लाइन का एक स्टेशन हैं। यहां थाना डाकखाना, बन विभाग का दफ़्तर, डाक बंगला और प्राइमरी स्कूल है। शुक्रवार को बाजार लगता है। डाक बंगले के सामने एक पहाड़ी की नुकीली चोटी पर एक प्राचीन मन्दिर और पुराने गढ़ के खंडहर हैं। बरगी गढ़ मंडला के गोंड राजा संग्रामशाह के ५२ गढ़ों में से एक प्रसिद्ध था। पड़ोस के बन का ईंधन इकट्ठा किया जाता है और रेल मार्ग से जबलपुर शहर को भेज दिया जाता है।

गढ़ी मुरवारा से ३० मील पूर्व की ओर बिजैराघोगढ़ से चंदिया को जानेवाली सड़क पर कटनी बिलासपुर लाइन की चंदिया स्टेशन से २२ मील दूर है। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। मंगलवार को बाजार लगता है।

बरवारा मुरवारा (तहसील से १३ मील दक्षिण-पूर्व में मुरवारा खितोली सड़क पर कटनी बिलासपुर लाइन की रुपौंद स्टेशन से २ मील दूर है। यहां पुलिस चौकी, डाकखाना और

प्राइमरी स्कूल है। सप्ताह में एक बार बाजार लगता है। यहां सामान रेलमार्ग से मुरवारा को भेजा जाता है।

बलखेड़ा कला जबलपुर तहसील में हिरन नदी के किनारे ग्रेट इण्डियन पेनिन्सुला रेलवे की शाहपुरा स्टेशन से १६ मील उत्तर-पश्चिम की ओर नरसिंहपुर ज़िले की सीमा के पास है। यहां शनिवार को बाजार लगता है। इसमें अनाज और कपास की बिक्री होती है। यहां डाकखाना, पुलिस चौकी और प्राइमरी स्कूल है।

भेड़ाघाट का छोटा गाँव नर्मदा के किनारे पर सड़क द्वारा जबलपुर से १३ मील और मीरगंज रेलवे स्टेशन से ३ मील दूर है। स्टेशन से यहां तक पक्की सड़क आती है। कहते हैं कि यहां भृगु ऋषि का आश्रम था। इसी से इसका नाम बिगड़कर भेड़ाघाट पड़ा। इस के पास ही नर्मदा में बावनगंगा नदी मिलती है। सम्भव है दो नदियों का मेल होने से इसका नाम भेड़ाघाट पड़ा हो। यहां संगमरमर की १०० ऊंची चट्टानों के बीच में घिरी हुई दो मील तक नर्मदा अपना संकुचित मार्ग बनाती है। यह दृश्य बड़ा मनोहर है। जब सफेद संगमरमर पर सूर्य की किरणें पड़ती हैं तो यह दृश्य बड़ा सुंदर लगता है। निर्मल चांदनी रात में यह सुंदरता और भी अधिक बढ़ जाती है। निचले भाग में इन चट्टानों के बीच में अनेक गुफायें हैं। इनमें नर्मदा का निर्मल नीला, गहरा पानी घुसा हुआ है। इन चट्टानों के बीच में यात्री धुंआधार (प्रपात) तक नाव द्वारा आ सकता है। नाव का किराया निश्चित है। थोड़ी थोड़ी दूर पर दुर्गम चट्टानों के निकले हुये सिरों पर मधु-मक्खियों ने छत्ते

बनाये हैं। शीतकाल में यह मक्खियां शान्त रहती हैं। ग्रीष्मकाल में जरा छेड़ने पर भी इनका झुण्ड छेड़ने वाले पर टूट पड़ता है। एक बार रेलवे इंजीनियर के एक साथी ने चट्टानों में बसेरा लेने वाले नीले कबूतरों पर गोली छोड़ी। इससे मक्खियां भड़क गईं। वे दोनों पर टूट पड़ीं। साथी तो डुबकी मारकर निकल गया। लेकिन इंजीनियर का मक्खियों ने पीछा न छोड़ा। कुशल तैराक होते हुये भी अन्त में वह डूब कर मर गया। ऊपर टीले पर उसकी कब्र बनी है। जिस चट्टान के पास उसकी मृत्यु हुई उसका एक टुकड़ा काटकर कब्र में लगाया गया। इस प्रकार की बोंहड़ा मधु-मक्खियां जंगल में बहुत रहती हैं। इनका शहद बाहर बहुत भेजा जाता है। रात में मक्खियाँ नही छेड़ती हैं। दाहिने किनारे पर शिव जी के कई मन्दिर बने हैं। कहते हैं हनूमान की बन्दर सेना ने लंका को जाते समय यहीं पर नर्मदा को छलांग कर पार किया था। यहीं एक शिला पर इन्द्र के ऐरावत का पद चिन्ह बताया जाता है।

जहां सब से ऊंची (१०५ फुट) शिला है वहीं नर्मदा की गहराई (४८ फुट) है। डाक बंगले के पास नर्मदा की गहराई १६९ फुट है। बावन गंगा के पड़ोस में कई नुकीली पहाड़ियां हैं। पंचवटी घाट पर बावन गंगा नर्मदा में मिलती है।

जिन पवित्र तीर्थों का महाभारत में वर्णन है उन्हीं में एक पंचवटी घाट है। कहते हैं युधिष्ठिर ने इसका दर्शन किया था। बावन गंगा को यहां सरस्वती कहते हैं। सरस्वती और नर्मदा के बीच की एक पहाड़ी पर प्राचीन मन्दिर है। नर्मदा तट से चोटी पर बने हुये गौरीशंकर के मन्दिर तक पहुँचने के लिये

चट्टानों को काटकर सीढ़ियां बनाई गई हैं। मन्दिर के दक्षिण में सफेद शिलाओं से घिरी हुई नर्मदा का नीला जल है। उत्तर-पश्चिम की ओर घने जंगल से ढकी हुई पहाड़ियां हैं। पूर्व की ओर नर्मदा के किनारे किनारे जबलपुर की ओर मीलों तक खुला हुआ दृश्य है। संगम के पास पुराने समय में राजाओं ने स्नान करके ब्राह्मणों को गांव दानमें दिये। गौरीशंकर के मन्दिर में गौरी और शंकर की मूर्तियां हैं। इसके पास ही दुर्गा की चौंसठ जोगिनी बनी हुई हैं। ८२ मूर्तियों के आसनों पर बारहवीं शताब्दी के अक्षरों में लेख खुदे हैं। मूर्तियों में बढ़िया कारीगरी है। लेकिन जब आसफ खां ने १५६४ में रानी दुर्गावती पर आक्रमण करते समय इन मूर्तियों को भी अंग भंग कर दिया। कार्तिकी पूर्णिमा को यहां संगम स्नान का मेला लगता है और तीन चार दिन रहता है। यहां दमोह सिउनी नरसिंहपुर और पड़ोस के राज्यों के यात्री स्नान करने आते हैं। यात्रियों की सुविधा के लिये घाट पर राजा गोकुलदास ने एक धर्मशाला बनवा दी है। मेला के अवसर पर यहां सैकड़ों दुकानें आ जाती हैं। यहां बड़ा सुन्दर सोपस्टोन पाया जाता है। संगमरमर भी निकाला जाता है। सफेद, काला, बैंजना आदि कई रंग का होता है। राजा रघुजी भोंसला ने यह (भेड़ाघाट) गांव महन्त हरदेव पुरी गुसाईं को माफी में दिया था। इस समय यहां उनके चेलों का अधिकार है।

विजैराघोगढ़—मुरवारा (तहसील) से २४ मील उत्तर-पूर्व की ओर जुकोही रेलवे स्टेशन से १२ मील दूर है। पन्ना राजा के दरबार में बेनी हजूरी नाम के एक व्यक्ति ने बड़ी उन्नति

की। धीरे धीरे वह पन्ना राज्य का दीवान बन गया। पन्ना राजा के विद्रोही के साथ लड़ते लड़ते वह मारा गया। राजा ने प्रसन्न होकर उसके बेटे दुर्जनसिंह को मैहर राज्य दे दिया। इसी में विजैराघोगढ़ भी सम्मिलित था। दुर्जनसिंह के मरने पर उसके दोनों बेटे विशनसिंह और प्रयागदास आपस में लड़ने लगे। विशनसिंह को मैहर और प्रयागदास को विजैगढ़ का राज्य मिला। प्रयागदास ने विजैराघोगढ़ में राजधानी बनाई। यहां उसने एक गढ़ और सुन्दर मन्दिर बनवाया। १८५७ में उसके उत्तराधिकारी सरजूप्रसाद ने विद्रोह किया। इससे यह राज्य जब्त कर लिया गया। १८६५ में यहां एक तहसील बनी। १८७५ में तहसील मुरवारा में चली गई। यहां कपड़ा बुनने, रजाई आदि छापने और रंगने का काम होता है। यहां कांसे की चूड़ियां बनती हैं। यहां थाना, डाकखाना, अस्पताल और मिडिल स्कूल है। सोमवार को बाजार लगता है।

बिल्हारी मुरवारा तहसील का सबसे बड़ा गांव है। यह जबलपुर से ५३ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। निवाड़ रेलवे स्टेशन यहां से ९ मील दूर है। इतनी ही दूर कटनी मुरवारा स्टेशन है। कहते हैं पुराने समय में बिल्हारी एक बड़ा नगर था। इसका घेरा २४ मील था। इसके मध्य में भैंसाकुंड था। जो इस समय गांव से ४ मील पश्चिम की ओर है। इसका प्राचीन नाम पुष्पवती नगरी था। समस्त गांव में प्राचीन मन्दिरों की मूर्तियां और गढ़े हुये पत्थरों के भग्नावशेष बिखरे हुये हैं। इस समय कोई मन्दिर समूचा नहीं है। मन्दिरों के प्राचीन बढ़िया गढ़े हुये पत्थर के खम्भों के ऊपर निर्धन लोगों के खपरैल से

छाये हुये छोटे छोटे घर बने हैं। यहां ब्रह्मा, विष्णु और शिव की मूर्तियों के अतिरिक्त सात घोड़ों के ऊपर सूर्य भगवान की मूर्ति है। यहीं लक्ष्मण सागर, धबना ताल, विष्णु वाराह का मन्दिर और काम कन्दला है। इसमें विष्णु और वाराह की सुंदर मूर्ति है। कहते हैं माधवानल इसी गांव का निवासी था। माधवानल बड़ा गानेवाला था। उसने काम कन्दला नाम की एक वेश्या से विवाह किया था। उसी ने यह महल बनवाया जो कामकन्दला नाम से प्रसिद्ध है। एक शिलालेख (जो इस समय नागपुर के अजायब घर में है) में लिखा है कि चेदिराज केयूर वर्ष की रानी नोहला ने यहां ग्यारहवीं शताब्दी में शिव मन्दिर बनवाया था। चेदि राजाओं के बाद यहां चन्देल राजाओं ने शासन किया। कहते हैं लक्ष्मणसिंह ने यहां एक छोटा गढ़ और सागर (ताल) बनवाया था। १८५७ के विद्रोह में यह गढ़ नष्ट होगया। इसके पत्थर रेलवे के काम में लाये गये। जबलपुर-मिर्जापुर सड़क के बनाने के पूर्व गंगा की घाटी से आनेवाला मार्ग यहीं बिल्हारी होकर नर्मदा की घाटी में पहुँचता था। इसके पड़ोस में पान बहुत होता है। बिल्हारी का पान दूर दूर तक प्रसिद्ध है। यहां एक मिडिल स्कूल है। सोमवार को बाजार लगता है।

बुढ़ागर सिहोरा तहसील में सिहोरा से ११ मील दक्षिण पश्चिम में घोरी-पनागर से ४ मील दूर है। इसके पश्चिम में विशाल (१ मील लम्बा १ मील चौड़ा) बुढ़ान सागर है। इसका इतिहास बड़ा मनोरंजक है। कहते हैं गढ़ मंडला के राजा हृदय शाह के समय में, बुढ़ान, सरमन, कोवरई और कोदू नाम के

चार गड़रिये यहां रहते थे। वे खेत में काम करते थे। उनकी बहू उनके लिये भोजन ले जाती थी। एक दिन बहू का आभूषण (पैरी) गिर गया। उसने पत्थर को हंसिया से खोदा। पारस पत्थर को छूने से हंसिया सोने का होगया। इस पर चारो भाई इस पारस पत्थर को घर ले गये। जहां जहां लोहा था उसे इस पारस पत्थर से लगाकर उन्होंने सोने में बदल लिया। फिर वे राजा के पास इसे ले गये। राजा ने प्रसन्न होकर यह उन्हें लौटा दिया और आदेश दिया कि वे अपने प्रचर धन को सागर बनवाने में खर्च करें। इसी से बुढ़ान ने बुढ़ान सागर, सरमन ने सरोली मझवारा में सरमन सागर कुवरई ने कुआं में कुवरई सागर और कोदू ने कुन्दन में कुन्दन सागर खुदवाया। यहां गांव में एक प्राइमरी स्कूल है।

दैमापुर सिहोरा से १० मील पूर्व में इस समय पांच छः गोंड घरों का गांव है। पर यह अति प्राचीन है कहते हैं यहां के राजा ने श्रीरामचन्द्र के अश्वमेध यज्ञ के घोड़े को पकड़ कर उनकी सेना से संग्राम किया था। उस समय यह एक बड़ा नगर था और कई मील तक फैला हुआ था। इसे देवपुर कहते थे। इसी से बिगड़ कर दैमापुर नाम पड़ा। यहां कुछ सती स्तम्भ और प्राचीन भग्नावशेष हैं।

घोरी का छोटा गांव हरदुआ रेलवे स्टेशन से ४ मील पश्चिम की ओर है। यहां केन नदी के बायें किनारे पर तीस चालीस छोटे छोटे मन्दिर घने जंगल में दबे हुये हैं। एक मन्दिर कुछ अच्छी दशा में है।

देश दर्शन

धीमर खेड़ा (धीमरों या मछली मारने वालों का गांव) बहुत छोटा है। यह सिहोरा से २१ मील पश्चिम में मौरी के किनारे है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। गुरुवार को बाज़ार लगता है। बन की उपज का व्यापार होता है।

गढ़ा (गढ़ या दुर्ग) जबलपुर से ४ मील पश्चिम की ओर है और जबलपुर की म्यूनिसिपैल्टी के अन्तर्गत है। किसी समय यह गढ़ मंडला के गोंड-राजवंश की राजधानी था। गोंड राजा मदन-महल में रहते थे। इसी महलवाली पहाड़ी की तलहटी में जबलपुर शहर बसा है। आइन अकबरी में यहां के धन के विषय में लिखा है कि इसके पड़ोस में हाथी बहुत मिलते हैं। लोग हाथियों और सोने की मुहरों को देकर कर चुकाते हैं। जब गोंड राजाओं ने यहां से राजधानी उठाकर पहले सिंगोरगढ़ में और फिर मंडला में नई राजधानी बनाई तब से गढ़ की अवनति आरम्भ हुई। मदन-महल को ११०० ईस्वी में मदनसिंह ने बनवाया था। यह सादा महल पहाड़ी की एकदम चोटी पर बनाया गया था। इस समय यह खंडहर है। यहां से दूर तक दृश्य दिखाई देता है। वर्षा ऋतु में पड़ोस का निचला प्रदेश खेतों में बांध बने होने के कारण एक विशाल झील के समान मालूम होता है। इसके बीच में वृक्ष और ऊंचे स्थान द्वीप के समान उठे रहते हैं। महल के पश्चिम में गंगासागर है। इसके पास बालसागर है। पास ही सरदा देवी का मन्दिर है। यहां आसाढ़ और श्रावण मास के प्रत्येक सोमवार को लोग पूजा करने आते हैं। देवताल के पास कार्तिक सुदी तृतीया को मेला लगता है। गढ़ा में कोष्टा और जुलाहे अच्छी सारी बुनते हैं।

यहां इंगलिश स्कूल, थाना और डाकखाना है। बाज़ार प्रतिदिन लगता है।

गोसलपुर सिहोरा तहसील से ७ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर मिर्जापुर से आने वाली सड़क पर स्थित है। पहले यह अधिक प्रसिद्ध था। कहते हैं चेदिराजवंश की रानी गोसलदेवी ने इन्हें बारहवीं शताब्दी में बसाया था। यहां कपड़ा बुनने और रंगने का काम होता है। लाख का व्यापार भी होता है। बुधवार को बाज़ार लगता है। इसके पास ३०० वर्ष का पुराना रामसागर (ताल) है। यह कभी नहीं सूखता है। इसके बीच में एक मन्दिर बना है। इसके पास जंगल है जिसमें जंगली सुअर बहुत रहते हैं। यहां एक प्राइमरी स्कूल और डाकखाना है।

ग्वारीघाट (ग्वाले का घाट) नर्मदा के किनारे पर जबलपुर से ५ मील दूर है। यहां रेलवे स्टेशन भी है। यहां नर्मदा के पक्के घाट बने हैं। कार्तिकी पूर्णिमा, वसन्त पंचिमी और ग्रहण के अवसर पर यहां नर्मदा स्नान का मेला लगता है। वर्षा ऋतु में नर्मदा को पार करने के लिये नाव रहती है। खुश्क ऋतु में पांज हो जाती और अस्थायी पुल बन जाता है। गांव से २ मील ऊपर की ओर गौर नर्मदा के संगम के पास खिरनी घाट में रेल का पुल बना है। यहां पुलिस चौकी, सराय और धर्मशाला है।

इन्द्राना सिहोरा से १८ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर हिरन नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। यहां एक प्राइमरी स्कूल

है। लाख का व्यापार होता है। रविवार को बाज़ार लगता है और पंचमी का भी मेला लगता है।

इटोरा सोन की सहायक महानदी के किनारे पर मुरवारा से ३५ मील उत्तर-पूर्व की ओर गढ़ी से रीवां राज्य के अमरपुर को जानेवाली सड़क पर स्थित है। मदनपुर स्टेशन यहां से २१ मील दूर है। सरजू के किनारे पर बसे हुये इटार गांव से आने वाले शिवपालसिंह नामी एक बघेल ने बसाया था। इसी से इसका नाम इटोरा रक्खा गया। यहां एक पुरानी गढ़ी के खंडहर और चंडी देवी का मन्दिर है। इटोरा से गन्धकाली तक महानदी का दृश्य बड़ा सुन्दर है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। कार और चैत की नवमी को यहां चंडी देवी का मेला लगता है।

जबलपुर शहर ग्रेट इंडियन पेनिन्सुला रेलवे पर बम्बई से ६१६ मील और कलकत्ते से ७८४ मील दूर है। यहां से बंगाल नागपुर रेलवे की ११७ मील लम्बी शाखा लाइन गोंदिया को गई है। यह शहर नया है। प्राचीन समय में कालचूड़ राजाओं की राजधानी इसके पड़ोस त्रिपुरी (तेवार) में थी। गोंड राजाओं की राजधानी गढ़ या गढ़ा में थी। दोनों ही जबलपुर शहर के पास हैं। १७८१ में सागर के महाराष्ट्रीय पंडितों ने गढ़ मंडला के गोंड राजा को हराया तब से जबलपुर अधिक विख्यात हो गया। उन्होंने (मरहठों) ने अपनी राजधानी स्थापित की और एक छोटा किला बनाया। (जो मिट गया है।) जहां लार्डगंज है वहीं यह किला बना था। लार्ड विलियम बेंटिक १८३८ ई० में यहां पधारे थे। उन्हीं के सम्मानार्थ मुहल्ले का नाम लार्डगंज

रक्खा गया। १७९८ ई० में पेशवा ने यह जिला नागपुर के रघुजी भोंसले को दे दिया। लगभग १९ वर्ष तक उनका यहां राज्य रहा। सीता बल्दी की लड़ाई के बाद यहां अंग्रेज़ी कम्पिनी का अधिकार हो गया। नये प्रदेश की राजधानी जबलपुर शहर में बनी। जबलपुर शहर नर्मदा से प्राय: ६ मील की दूरी पर पहाड़ियों से घिरे हुये एक ऊंचे पथरीले स्थान पर बसा है। मिट्टी बलुई है। कुओं में पानी पास मिल जाता है। यह समुद्र तल से १३०६ फुट ऊंचा है। इसकी सड़कें साफ और चौड़ी हैं। पड़ोस में कई बगीचे और ताल हैं। यहां से सिडनी को जानेवाली सड़क पर भी दूर तक पेड़ लगे हैं। ओमटी नाला शहर को सिविल लाइन और छावनी से अलग करता है। शहर से उत्तर-पूर्व की ओर सेंट्रलगन केरिज फैक्टरी है। यह सरकारी कारखाना १९०५ ईस्वी में खुला। कारखाना एक पहाड़ी टीले के पास बना है। यहां आधुनिक यन्त्रों से काम होता है। गोरे और हिन्दुस्तानी काम करने वाले २००० से अधिक हैं। यहां नैपाल, बरमा और मलावार से आनेवाली टीक लकड़ी का प्रयोग होता है। सिविल लाइन और छावनी के पूर्व में एक ऊंची पहाड़ी है। इस पर गोरे सैनिकों की बारिकें बनी हुई हैं। छावनी में लगभग १५००० मनुष्य रहते हैं। यहां मिलेट्री डेरी और घास का फार्म है। जबलपुर में गोकुलदास, बल्लभदास का कपड़ा बुनने और सूत कातने का कारखाना है। सफेद चिकनी मिट्टी पास में मिलने से यहां बर्न कम्पिनी और परफेक्ट पाटरी वर्क्स नाम के दो कारखाने टाइल, पाइप, चीनी के बर्तन आदि बनाने का काम करते हैं यहां देशी जुलाहे कपड़ा बुनते हैं, ठठेरे पीतल के बर्तन

बनाते हैं। संगमरमर पत्थर से मूर्तियां प्याले आदि बनाये जाते हैं। यहां छोटी उम्र के कैदियों को सुधारने के लिये रिफार्मेटरी स्कूल है। यहां सेंट्रल जेल और कोढ़ीखाना है। एक कालेज, एक ट्रेनिंग कालेज और कई हाई स्कूल हैं। यह सिंचाई और बन-विभाग का बड़ा दफ्तर है। यहीं जिले की कचहरी और कमिश्नर का दफ्तर है। गोरे लड़के और लड़कियों का स्कूल अलग है। यहां के टाउन हाल को जबलपुर में करोड़पति राजा गोकुलदास ने बनवाया था। स्टेशन के पड़ोस का सुन्दर धर्मशाला भी उन्हीं का बनवाया हुआ है। कस्तूरचंद हितकारिणी हाई स्कूल को भोलानाथ सिंहाई ने अपने पुत्र कस्तूरचंद की स्मृति में स्थापित किया। इस्लामिया हाई स्कूल मुसलमानों के चंदे से बना है। यहां चर्च मिशनरी सोसाइटी और रोमन केथोलिक मिशन के भी स्कूल हैं।

कैमोरी गांव हिरन नदी के किनारे भाणेर पहाड़ियों के सामने स्थित है। राजा नरिन्दशाह के शासन काल में (१६७९-१७२७ ई०) में चूड़ामन् नाम के एक अहीर ने इसे बसाया था। उसके बेटे ने पड़ोस की पहाड़ियों के नाम से गांव का नाम कैमोरी रक्खा। गदर में यहां के जागीरदारों ने अंग्रेजों की बड़ी सहायता की थी। इसी के उपलक्ष में दस गांव माफी में दे दिये गये। यहां एक प्राइमरी स्कूल और डाकखाना है। शुक्रवार को बाजार लगता है। यहां नौ मन्दिर हैं। २ मन्दिर पहाड़ के शिखर पर बने हैं। नदी के दूसरे किनारे पर पहाड़ियों में १०० फुट लम्बी गुफा है। यहां कुछ मुसलमान भी बस गये हैं जो कपड़ा छापने का काम अच्छा करते हैं।

करितलै मुरवारा तहसील में कैमूर श्रेणी के पूर्व में स्थित है। इसका पुराना नाम कर्णपुर है। यहां बाराह अवतार की एक विशाल मूर्ति मिली। यहां कच्छप, मत्स्य और सिंह की भी मूर्तियां मिली हैं। यहां गुप्त काली (४९३ ई०) का एक ताम्र लेख पाया गया है। यहां एक प्राइमरी स्कूल है। गुरुवार को बाज़ार लगता है।

काटंगी गांव भाणेर पहाड़ियों की तलहटी में हिरन नदी से २ मील उत्तर की ओर जबलपुर शहर से २३ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। कटाव या सपाट ढाल पर स्थित होने से गांव का नाम कटंगी पड़ा। पहले यहां गोंड राजा की सेना रहती थी। यहां अच्छी बन्दूकें बनती थीं। कैमूर दर्रे के पास स्थित होने से मरहठों के समय में इसका सैनिक महत्व बढ़ गया। गांव के बीच में एक बड़ा ताल और पक्के घाट बने हैं। यहां एक धर्मशाला और कुछ मन्दिर हैं। १८१७ ई० में अंग्रेजी राज्य में मिलाने के समय यह एक तहसील का केन्द्र स्थान बना था। यहां कुछ मुसलमान रंगरेज़ और शीशे की चूड़ी बनाने वाले रहते हैं। यहां एक प्राइमरी स्कूल, डाकघर और फौजी पड़ाव है। सोमवार को बाज़ार लगता है। कुछ पुराने मन्दिर हैं।

कटनी रेलवे जंकशन मुरवारा तहसील में मुरवारा नगर से मिला हुआ है। मुरवारा का स्टेशन कटनी है। यह बम्बई से ६७८ मील और कलकत्ते से ७२७ मील दूर है। यहां से बंगाल, नागपुर रेलवे की एक लाइन बिलासपुर को गई है जो यहां से १९८ मील दूर है। एक शाखा लाइन बीना को गई है। महानदी की सहायक कटनी नदी पास ही है।

खितोली गांव मुरवारा (तहसील) से ३० मील और कटनी बिलासपुर लाइन की चंदिया स्टेशन से ११ मील दूर है। गांव से १ मील दक्षिण-पूर्व की ओर मदारनदी के आरपार सिंचाई का बांध बना है। इसके पड़ोस के सरकारी बन में चीते और दूसरे जंगली जानवर बहुत मिलते हैं। यहां प्राइमरी स्कूल और डाकघर है। गुरुवार को बाज़ार लगता है।

कुम्भी सिहोरा तहसील से १० मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यहां ११८० ई० का एक ताम्र पत्र मिला है। जिसमें काल-चूड़ राजाओं की वंशावली लिखी हुई है। यहां तिल संक्रांति के दिन सतधारा (हिरन नदी की सात धाराओं) का मेला लगता है। यहाँ प्राइमरी स्कूल और डाकघर है।

कुण्डम गांव जबलपुर-शाहपुर सड़क पर २९ वें मील पर स्थित है। यहां थाना, डाकखाना, प्राइमरी स्कूल और पड़ाव हैं। सोमवार को बाज़ार लगता है। इसके पास ही हिरन नदी एक कुंड से निकलती है। इसी से इसका यह नाम पड़ा।

मझगवां सिहोरा तहसील से ११ मील दक्षिण-पूर्व की ओर सिहोरा रोड स्टेशन से ९ मील दूर है। यहां लोहे का कार-बार होता है। गुरुवार को बाजार लगता है। यहां स्कूल, थाना और डाकखाना है।

मझोलीगांव सिहोरा (तहसील)से १२ मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। पहले यहां विष्णु का सुंदर मन्दिर था। इस समय मन्दिर का पता नहीं है। लेकिन बाराह की मूर्ति विद्यमान है। यह मूर्ति नये मन्दिर के अंधेरे भाग में प्रायः छिपी सी है।

नया मन्दिर पुराने मन्दिर के स्थान पर बना है। इसके पास ही चूना पीसने की एक चक्की है। हर गौरी की मूर्तियां टूटी हुई हैं। एक जैन नग्न मूर्ति है। यहां कपड़ा बुनने का काम बहुत होता है। यहां डाकखाना, थाना और स्कूल है। गुरुवार को बाजार लगता है। इसमें पशुओं की भी बिक्री होती है।

मुरवारा इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान कटनी जंकशन के पास स्थित है। स्टेशन को प्रायः कटनी मुरवारा नाम से पुकारते हैं। यहां एक पक्का बाजार बना है। इसमें अनाज, घी, आलू, मसाले, लाख, चूना और पत्थर का व्यापार होता है। यहां चूने के पत्थर की १६ खदानें हैं। कुछ बलुआ पत्थर और चीनी मिट्टी की खदानें हैं। यहाँ कई मिलें हैं जो बिजली के जोर से चलती हैं। कटनी सीमेंट भारतवर्ष भर में प्रसिद्ध है। यहां लोहे आदि धातु की चद्दरों को रंगने के लिये मेटालिक धातु रंग तैयार करने का कारखाना है लोहे की ढलाई का भी काम होता है। यहां एक हाई स्कूल एक मिडिल स्कूल एक संस्कृत पाठशाला है। यहां थाना और डाक-तारघर है। दो धर्मशालायें हैं। कहते हैं इस स्थान पर युद्ध में एक ब्राह्मण का मूंड़ कट गया था उसी की स्मृति में इसका नाम मुड़वारा पड़ा।

पनगर पानगढ़ का अपभ्रंश है। यह जबलपुर से ९॥ मील उत्तर की ओर मिर्जापुर को जानेवाली सड़क पर घोरी रेलवे स्टेशन से १ मील की दूरी पर स्थित है। यहां के पान बहुत प्रसिद्ध हैं पानों के बगीचे बलेहा ताल के किनारे पर हैं। यह प्राचीन स्थान है। बाजार में काले पत्थर का एक बड़ा चबूतरा

है। इसे खेरमाता कहते हैं। इस पर वाराह की मूर्ति बनी है। शनिवार को बाजार लगता है। इसमें पशुओं की बिक्री बहुत होती है। पहले यहां लोहा बहुत बिकता था। यह सोनपुर, बघराजी और दूसरे स्थानों में साफ होता था। आज कल अनाज, बन की उपज, पीतल की थाली कटोरे और हाथ पांव के आभूषण बहुत बनते और बिकते हैं। यहाँ थाना, डाकघर, मिडिल स्कूल अस्पताल और पड़ाव है।

पाटन (पत्तन या पट्टन का अपभ्रंश है जिसका अर्थ नगर है) १८६३ ई० तक यह एक तहसील का केन्द्र स्थान था। इस समय यहाँ थाना, डाकघर, अस्पताल और मिडिल स्कूल है। बुधवार को बाजार लगता है। इसमें गाय बैल बहुत बिकते हैं।

पिपरिया कलां में पीपल के वृक्ष बहुत हैं। इसी से यह नाम पड़ा। यह हिरन नदी के किनारे स्थित है। गुरुवार को बाजार लगता है। इसमें अनाज बहुत बिकता है। यहां मेहरा लोग हाथ से कपड़ा बुनते हैं। यहाँ एक प्राइमरी स्कूल है।

रिठी का छोटा गाँव केन नदी के मोड़ पर मुरवारा से २० मील उत्तर-पश्चिम की ओर बीना-कटनी लाइन का एक स्टेशन है। गाँव के पूर्व गढ़े हुये और कटे हुये पत्थरों का समूह है जो दस बारह मन्दिरों के भग्नावशेष है। बड़े तालाब के पड़ोस का मन्दिर 'वाराह देव के स्थान' नाम से प्रसिद्ध है। यह वाराहवतार की एक पुरानी मूर्ति नाग के ऊपर बनी है। गांव में प्राइमरी स्कूल और डाकघर हैं। रविवार को बाजार लगता है।

रूपनाथ बहुरी बन्द से ३ मील और सिहोरा रेलवे स्टेशन से १९ मील दूर है। यहाँ एक गुफा में शिवजी का लिंग है। यहीं बन्दर चुआ नाला कैमूर श्रेणी के ढाल पर गिरता है। यहाँ पानी के कुंड और ५० से ६० फुट ऊंची पहाड़ी शिलाओं के बीच में जंगली पशु रहते हैं। यहाँ ३ कुंड अधिक बड़े हैं। एक कुंड के ऊपर दूसरा और दूसरे के ऊपर तीसरा कुंड है। सबसे ऊपर वाला रामकुंड, बीचवाला लक्ष्मण कुंड और नीचे वाला सीता कुंड कहलाता है। तिल संक्रांति के समय यहाँ मेला लगता है। यहाँ ईसा से २३२ वर्ष पूर्व सम्राट् अशोक का खुदवाया हुआ एक शिला लेख है। मध्यप्रान्त में यह सब से पुराना शिला लेख है। यह अशोक से पहले ही एक बड़ा तीर्थ था। यहाँ स्नान करने के लिये असंख्य यात्री आया करते थे। इसी से अशोक ने उनके लाभ के लिये यह लेख खुदवाया था।

सलैया रेलवे स्टेशन से ३० मील उत्तर-पश्चिम की ओर है। गाँव स्टेशन से ३ मील दूर है। यहाँ एक गढ़ (किला) है जो अब भी कुछ अच्छी दशा में है।

शाहपुरा—जबलपुर से १८ मील दक्षिण-पूर्व की ओर बम्बई को जाने वाली सड़क पर रेल का एक स्टेशन है। यहां सोमवार को बाजार लगता है और अनाज का व्यापार होता है। यहाँ थाना, डाकखाना, प्राइमरी स्कूल और पड़ाव है।

सिहोरा इसी नाम की तहसील का केन्द्र स्थान है। सिहोरा रोड रेलवे स्टेशन से २ मील और जबलपुर से २६ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। कहते हैं पहले उत्तर की ओर एक टीले पर

सिहोरागढ़ (किला) था। इसी से बिगड़ कर नगर का नाम सिहोर पड़ गया। इस समय गढ़ वाले भाग को गढ़ियापुरा और पड़ोस की भूमि को सिहोर कहते हैं। कुछ लोगों का अनुमान है कि यह नाम शिवपुर का अपभ्रंश है। जिले भर में सब से अधिक चावल यहीं से बाहर भेजा जाता है। कुछ गेहूँ, तिलहन और लाख बाहर भेजी जाती है। कच्चे लोहे को साफ करके खेरी लोहा तैयार किया जाता है। यह भी बाहर बहुत जाता है। फौलाद से हंसिया, कुल्हाड़ी और बसूला आदि बढ़ई के औजार बनाये जाते हैं। खितोला बाजार में अनाज और लाख के बड़े बड़े व्यापारी रहते हैं। अनाज भीतरी भागों से आता है और बम्बई को भेजा जाता है। सोमवार को बाजार लगता है। यहां एक मिडिल स्कूल, संस्कृत पाठशाला, अस्पताल, तहसील, थाना, डाक-तार घर और डाक बंगला है।

सिलोंदी गाँव सिहोरा से २६ मील दक्षिण-पूर्व की ओर एक व्यापारिक केन्द्र है। अनाज, घी, हर्रा, लाख और जंगल की उपज का व्यापार होता है। बुधवार को बाजार लगता है। यहाँ प्राइमरी स्कूल और डाकघर हैं।

सिमरा केन (क्यान) नदी के दाहिने किनारे पर सती पहाड़ के उत्तरी सिरे पर कटनी मुड़वारा स्टेशन से १० मील दूर है। गाँव से पूर्व की ओर ४ मन्दिरों के भग्नावशेष हैं। यहां बामन और वाराह अवतार की मूर्तियां हैं। बराती ताल के किनारे पर एक पांचवें मन्दिर का भग्नावशेष है। गाँव के बीच में एक चबूतरे पर ब्रह्मा, विष्णु और दूसरी मूर्तियाँ हैं। एक दुर्गा की मूर्ति है। एक मन्दिर के पुराने पत्थर में ग्यारहवीं शताब्दी के

कालचूड़ी नरेश कर्णदेव का उल्लेख है। १२९८ में राव दौलत सिंह की स्त्री कमलदेवी सती हुई थी।

स्लीमानाबाद सिहोरा (तहसील) से १५ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। स्लीमानाबाद स्टेशन ३ मील दूर है। इस गांव को कर्नल स्लीमैन ने १८३२ ई० में बसाया था। १८६८ ई० तक यहाँ तहसील रही। फिर सिहोरा तहसील होगया। यह गांव कटनी नदी के किनारे पर स्थित है। यहां अनाज, लाख, हर्रा और घास का व्यापार होता है। स्लीमानाबाद स्टेशन से डेढ़ मील की दूरी पर दो निचली पहाड़ियों के बीच में तांबे की खानें हैं। यहां थाना, डाकखाना और प्राइमरी स्कूल है। शुक्रवार को बाजार लगता है।

सोनपुर (स्वर्णपुर) जबलपुर शहर से ९ मील उत्तर-पूर्व की ओर हिरन की सहायक परिपत नदी के ऊँचे किनारे पर बघराजी—सड़क पर स्थित है। गांव जंगल के सिरे पर बसा है। इसके पड़ोस में जंगली जानवर बहुत हैं। दूसरे किनारे पर लखनवारा गांव है। यह स्थान बहुत पुराना है। गोंड राजाओं के समय में यह सैनिक महत्व का गांव था। मरहठों का भी यहाँ एक रिसाला रहता था।

तेवार भेराघाट को जाने वाली जबलपुर से ८ मील पश्चिम की ओर गढ़ा के पास है। भोंसला राजा ने यह गाँव नागपुर के एक महाराष्ट्रीय ब्राह्मण को दान दिया था। अंग्रेजी राज्य में भी माफी बनी रही। यहाँ एक प्राइमरी स्कूल और डाकघर है। रविवार को बाजार लगता है। यहाँ बसे हुये लठिया लोग

संगमरमर और दूसरे पत्थर की मूर्तियाँ, प्याले, चक्कियाँ, कूंड़ी आदि बनाते हैं। तेवार का पुराना नाम त्रिपुर या त्रिपुरी था। पास के त्रिपुरेश्वर गांव में शिवलिंग स्थापित है। त्रिपुरी नाम से अंकित ईसा से ३०० वर्ष पूर्व के सिक्के मिले हैं। परिव्राजक महाराजाओं के पाँचवीं शताब्दी के खुदवाये हुये शिलालेखों में त्रिपुरी नाम आया है। आगे चलकर यहाँ कालचूड़ राजाओं की राजधानी बनी। उस समय यह नर्मदा तट तक फैला हुआ था। इसमें गोपालपुर भी शामिल था। राजा कर्णदेव ने यहां कई मन्दिर और महल बनवा कर नगर को बड़ा सुन्दर बना दिया। उनके समय में नगर दक्षिण-पश्चिम की ओर बहुत बढ़ गया। उन्होंने इसका नाम बदल कर कर्णवती रक्खा। इसके पड़ोस का एक स्थान इस समय भी करनदेल कहलाता है। इसके पड़ोस में बेल वृक्षों का बन था। ऊंचे स्थान पर हाथी गढ़ बना हुआ था। गढ़ के तीन ओर खांई और एक ओर बावन गंगा नदी बहती थी जो भेराघाट के पास नर्मदा में गिरती है। यहाँ के भग्नावशेषों के पत्थरों से बहुत से घाट और बनाये गये हैं। यहाँ बालसागर नाम का एक बड़ा ताल है। इसके बीच में एक मन्दिर बना है। यह मन्दिर पुराने पत्थरों से बनाया गया है। इसके एक पत्थर पर बारहवीं शताब्दी का लेख खुदा हुआ है।

तिगवां का छोटा गाँव बहुरीबन्द से २ मील उत्तर की ओर है। कहते हैं यहीं झांझनगढ़ था जहाँ आल्हा ऊदल की गोंड राजा से लड़ाई हुई थी। यहाँ २५० फुट लम्बा और १२० फुट चौड़ा टीला है जो गढ़े हुये पत्थरों का बना है। यहीं कंकाल देवी का मन्दिर है। यह मध्य प्रान्त के प्राचीन मन्दिरों में से एक

है। इसके द्वार पर गंगा-यमुना के चित्र खुदे हुये हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ तीस और मन्दिरों के भग्नावशेष हैं जिन्हें रेलवे के ठेकेदारों ने प्रायः नष्ट कर डाला।

तिलवाड़ा नर्मदा के किनारे पर जबलपुर से ६ मील दक्षिण-पश्चिमकी ओर नागपुरको जानेवाली पुरानी सड़क पर स्थित है। इस स्थान पर नर्मदा की रेतीली तली बड़ी चौड़ी होगई है। यहां तिल संक्रांति के अवसर पर नर्मदा स्नान का मेला लगता है और तीन चार दिन तक रहता है। कुछ व्यापार भी होता है गाँव के पास रामनगर की पहाड़ियों पर स्लेट की खदानें हैं। घाट पर महादेव का पुराना मन्दिर है।

उमरिया सिहोरा तहसील का सब से बड़ा गाँव है। यह सिहोरा से १२ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। स्लीमानाबाद रेलवे स्टेशन ९ मील दूर है। यहाँ बरई लोग पान बहुत उगाते हैं। यह पान दूर दूर तक जाता है। अनाज, लकड़ी और बाँस का भी व्यापार होता है। रविवार को बाजार लगता है। यहाँ बढ़िया कारीगरी के पुराने मन्दिरों के भग्नावशेष हैं। एक मन्दिर के द्वार पर दो हाथियों और लक्ष्मी की मूर्ति बनी है। एक गरुड़ की मूर्ति है। यहाँ थाना, डाकघर और स्कूल है।

देश दर्शन

पुस्तकाकार सचित्र मासिक पत्र

देश-दर्शन में प्रति मास किसी एक देश का सर्वाङ्ग पूर्ण वर्णन रहता है। लेख प्रायः यात्रा के आधार पर लिखे जाते हैं। आवश्यक नक्शों और चित्रों के होने से देश-दर्शन का प्रत्येक अङ्क पढ़ने और संग्रह करने योग्य होता है।

मार्च १९३९ से जनवरी १९४५ तक देश-दर्शन के निम्नाङ्क प्रकाशित हो चुके हैं:—प्रत्येक अंक का मूल्य ।=) है।

लङ्का, इराक, पैलेस्टाइन, बरमा, पोलैंड, चेकोस्लोवेकिया, आस्ट्रिया, मिस्र भाग १, मिस्र भाग २, फिनलैंड, बेल्जियम, रूमानिया, प्राचीन जीवन, यूगोस्लैविया, नार्वे, जावा, यूनान, डेनमार्क. हालैंड. रूस, थाई (श्याम) देश, बल्गेरिया, अल्सेस लारेन, काश्मीर, जापान, ग्वालियर, स्वीडन, मलय-प्रदेश, फिलीपाइन, तीर्थ दर्शन. हवाई द्वीपसमूह, न्यूज़ीलैंड, यूगिनी, आस्ट्रेलिया, मेडेगास्कर, न्यूयार्क, सिरिया, फ्रांस, अल्जीरिया, मरक्को, इटली, ट्यूनिस, आयरलैंड, अन्वेषक दर्शन भाग १,२,३, नैपाल, स्विज़रलैण्ड, आगरा, अरब, कनाडा, मेवाड़, मेक्सिको, इङ्गलैंड, विश्वाश्चर्य, पनामा, इन्दौर, पेरेग्वे, जबलपुर, काकेशिया, रीवां, बर्लिन और मालाबार·····

'भूगोल'-कार्यालय ककरहाघाट, इलाहाबाद।

Published by the Editor (Pt. Ram Narain Misra, B.A.)
and Printed at the Bhugol Press, Kakrahaghat,